अन्तरा शब्दशक्ति

मासिक वेब पत्रिका

अंक 6 दिसंबर 2017

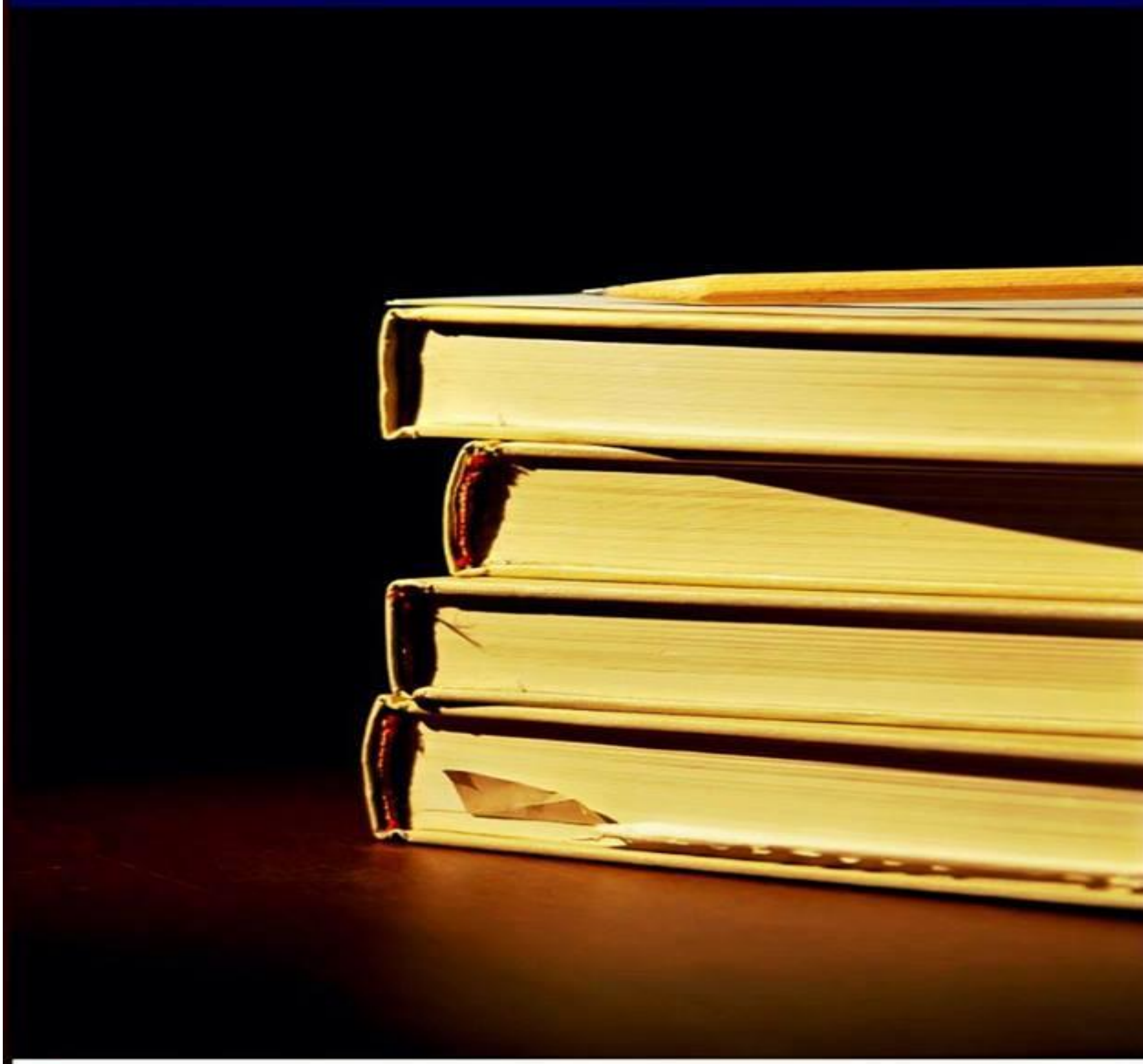

सेन्स समूह का उपक्रम www.antrashabdshakti.com

।।~अंतरा-शब्दशक्ति~।।

संस्थापक एवं संपादक

प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक सलाहकार

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

सहयोगी एवं सलाहकार

समकित सुराना

मनोज जैन 'मधुर'

ब्रजेश शर्मा 'विफल'

कैलाश बिहारी सिंघल

देवेंद्र सोनी

कीर्ति वर्मा

पिंकी परुथी 'अनामिका'

वेबसाइट

www.antrashabdshakti.com

ईमेल

antrashabdshakti@gmail.com

फेसबुक पेज

https://www.facebook.com/www.antrashabdshakti/

फेसबुक समूह

https://www.facebook.com/groups/989086901140447/

अनुक्रमणिका

संपादकीय

प्रीति समकित सुराना 5

पाठकीय समीक्षा

पिंकी परुथी "अनामिका" 8

गीत-नवगीत

कैलाश सोनी सार्थक 10

डॉ श्याम मनोहर सीरोठिया 11

मनोज जैन मधुर 12

डॉ.अशोक गौतम 13

मुक्तक

किशोर पारीक "किशोर" 14

श्वेता सिंह 15

ग़ज़ल

नीता सक्सेना 16

कवि राजेश पुरोहित 17

बन्टी दुबे "गीत" 18

सुनीता लुल्ला 19

नज़्म

शिरीन भावसार 20

कैलाश बिहारी सिंघल "केसू" 21

लघुकथा

नीरज जैन 22

देवेंन्द्र सोनी 23

डॉ. मालती महावर बसंत 24

राजीव कुमार 25

दोहे

जयराम जय 26

कुमार रविन्द्र 27

हाइकु

पूनम राजेश तिवारी 28

नीरजा मेहता 29

नई कविता

प्रिया वर्मा 30

राकेश धर दिवेदी 31

आनन्द कुमार राय 32

मीनाक्षी सुकुमारन 33

अदिति रूसिया 34

अजय जैन 'विकल्प' 35

कहानी

मुकेश दुबे 36

अश्विनी कुमार चौबे 38

बाल कहानी

कीर्ति प्रदीप वर्मा 40

राजेन्द्र श्रीवास्तव 41

बाल कविता

राजश्री तिवारी पांडे 43

सुहानी रुसिया (नन्ही कलम) 44

आलेख

सुधा शर्मा 45

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा 48

संस्मरण

अर्पण जैन "अविचल" 49-53

रिपोतार्ज

शाह ऐजाज़ 54-55

अनुवाद

रचनाकार :- साबिर हक़ा (ईरान)

अनुवादक :- गीत चतुर्वेदी (भोपाल)

56-57

साक्षात्कार

रचनाकार - ब्रजेश शर्मा 'विफल'

प्रस्तुतकर्ता - पिंकी परुथी 'अनामिका'

58-66

पुस्तक समीक्षा

समीक्षित पुस्तक - “कस्तूरी की तलाश” (श्रृंखलित पद्य)

समीक्षक- डॉ.सुरेन्द्र वर्मा

67-69

जनवरी 2017 अंक 7 नववर्ष विशेषांक हेतु रचनाएँ antrashabdshakti@gmail.com पर आमन्त्रित हैं।

रिश्तों में अपेक्षा अनपेक्षित है?????

प्रीति समकित सुराना

अकसर पढ़ा और सुना कि सुखी रहना चाहते हो तो किसी से अपेक्षा मत रखो पर क्या ये संभव है??? मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जो एक दूसरे के विचारों,संस्कृति, भाषा,धर्म, दृषिटकोण आदि में देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार सामन्जस्य रखते हुए साथ साथ गुजर बसर करते हैं।देश के नागरिक अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग धर्म कर्म और धन के आधार पर अलग-अलग समाज का निर्माण करते हैं जिसकी इकाई व्यक्ति होता है।एक व्यक्ति ईश्वर से भक्त का, जिससे जन्म लेता है उससे माता/पिता का, जिसे जन्म देता है उससे पुत्र/पुत्री का, जो माता पिता के आत्मज होते हैं उनसे भाई/बहन का, जिससे विवाह करता है उससे पति/पत्नी का, जिसके साथ काम करता है उससे सहकर्मी का, जिसका काम करता है उससे कर्मचारी का, जिससे अपने काम करवाता है उससे मालिक का, जिसके पड़ोस में रहता है उसके पडोसी का, जिससे सीखता है उससे शिष्य का,जिसे सिखाता है उससे गुरु का और इसी तरह हर पल हर क्षण कोई न कोई रिश्ता जीता ही है।

अब कल्पना कीजिये इन रिश्तों में अपेक्षा के न होने की,.. ईश्वर से प्रार्थना की कि मेरा भला हो,.. और उसी पल कोई हादसा हो जाए तब ईश्वर से प्रार्थना में बचाव की फरियाद या अपेक्षा नहीं होती? क्या ईश्वर को भी भक्तों से भक्ति की अपेक्षा नहीं होती? क्या माता/पिता शिशु को जन्म देकर उसकी परवरिश बिना किसी अपेक्षा के करते हैं? क्या संतान को माता-पिता से कोई अपेक्षा नहीं होती? क्या भाई -बहन का स्नेह भी सचमुच बिना अपेक्षा का होना चाहिए? क्या एक मालिक अपने कर्मचारी से वेतन के बदले काम की अपेक्षा न करे? क्या एक कर्मचारी अपने मालिक से वेतन के साथ सदव्यवहार की अपेक्षा न करे? पडोसी या सहकर्मी से सुविधाजनक सहयोगात्मक व्यव्हार न रखे ? गुरु से आशीर्वाद और शिष्य से विनय की अपेक्षा न हो? देश के नेताओं से देश के विकास की अपेक्षा न हो ? नागरिकों से संविधान के नियमों के पालन की अपेक्षा न हो? मैंने नहीं देखा कोई भी रिश्ता जो अपेक्षाओं के बिना बना हो या निभा हो,.. प्यार-मनुहार, व्यापार-व्यव्हार, उपकार-उपहार ज़रुर कोई न कोई अपेक्षा ही वजह होती है हर रिश्ते की,.. माना यह एक सचाई ही है कि "अपेक्षा ही उपेक्षा का मूल कारण है" पर कोई अपेक्षा न करना "उपेक्षा से बचने का तरीका" भले ही हो पर सच ये भी है,..अपेक्षा विहीन रिश्ते का कोई अर्थ ही नहीं,.. बल्कि वो तो जिम्मेदारियों से भागने के बहाने

होनेवाली रिश्तों से विरक्ति है,.. क्यूंकि ईश्वर की भक्ति फल की आशा से ही सार्थक है भले ही मोक्ष या मुक्ति हो पर भक्ति का भी उद्देश्य होता है,..माता पिता बच्चों की परवरिश के साथ सुरक्षित भविष्य की कामना करते ही हैं,.. बच्चे अपने अभिभावकों से स्नेह सुरक्षा और मार्गदर्शन की उम्मीद करते ही हैं,.. किसी मित्र ने मुझसे कहा अपेक्षा और निर्भरता दो अलग चीजें हैं । मनुष्य सामजिक प्राणी होने के नाते निर्भर जरूर होता है किन्तु अपेक्षा किसी लालसा की पूर्णता या अपूर्णता को भी इंगित करती है और उपेक्षा ईर्ष्या क्रोध जन्म देती है। मैं एक साधारण गृहणी हूं मैं अपनी ही बात करती हूं मैं अपने पति पर निर्भर हूं,.इस निर्भरता के चलते केवल भरण पोषण से मेरा काम चल सकता है,..मैं अच्छा खाना बनाती हूं बच्चों और घर की जिम्मेदारी निभाती हूं,.. एक रुटीन है जो चल रहा है,..एक छुट्टी वाले दिन बच्चे डिमांड करते हैं कुछ स्पेशल बने,.. कभी मेरा मन करता है पति मुझे घूमने लेकर जाए,.कभी पति किसी आर्थिक समस्या में हो तो मुझसे चाहते हैं की हाथ खींचकर खर्च करुं,. अगर मैं बीमार हूं और पति मुझे हॉस्पिटल ले जाकर चेकअप करा दे दवाइयां ला दे पर मैं अपेक्षा करती हूं की दवाइयाँ वो खुद दे कुछ देर मेरे साथ बैठे,.. ये सब अपेक्षाएं ही तो है,..केवल निर्भरता तो घर की कामवाली बाई भी नहीं चाहती,.उसका भी काम में मन तब ज्यादा लगता है जब उसे अपनापन मिलता है,..जबकि उससे तो हमारा सिर्फ वेतन और काम का रिश्ता है वो वेतन के लिए और हम काम के लिए निर्भर हैं,.....

मेरा मनना है निर्भरता ही तो अपेक्षा की जननी है,.. ये छोटी छोटी अपेक्षाएं ही तो रिश्तों में रस घोलती हैं,..उपेक्षा झगड़े नोकझोक जीवन को खट्टे मीठे स्वाद देते हैं,..अनुभव देते हैं,..अपेक्षा हिंसात्मक रूप कभी नहीं लेती,.. अगर अपेक्षा प्रेम में हो,..रिश्तों में हो,..जब रिश्ते ही विकृत हों सोच ही नकारात्मक हो तो बात और है,..अन्यथा जीवन को उत्साह से जीना हो तो जिन पर निर्भर हैं उसने ही तो हम प्रेम,सहयोग,परवाह और प्रशंसा की अपेक्षा रखेंगे,....

ये मेरी व्यक्तिगत सोच है,..जरुरी नहीं सभी सहमत हों।कुल मिलाकर मुझे तो यही लगता है कि इसी तरह सभी रिश्ते अपक्षाओं के आधार पर ही बने हैं,... हां ये बात भी गौर करने योग्य है की अति अपेक्षा न हो क्यूंकि "अति सर्वत्र वर्जयेत्"।

देखिये ना मैंने इतना कुछ लिखा,..बहुत से शब्दों और आशयों की पुनरावृत्ति की,..एक लेखक अपने पाठकों से अपेक्षा तो करेगा ही ना कि उसका लिखा पढ़ा जाए,.. मुझे भी अपेक्षा है आप सबसे कि मेरा लिखा पढ़ें और प्रतिक्रिया भी दें,..आप प्रतिक्रिया नहीं देते हैं तो हमारे बीच लेखक और पाठक का रिश्ता नहीं बनेगा,..आप अच्छी प्रतिक्रिया देते हैं तो रिश्ता मधुर बनेगा,..आप बुरी प्रतिक्रिया देते हैं तो भी लेखक और पाठक का रिश्ता तो बनेगा ही,.. भले ही भाव उपेक्षा के हों क्योंकि मैंने आप सबसे प्रतिक्रिया की अपेक्षा की,..। और अपेक्षा ही उपेक्षा का कारण होता है,... ख़ैर!! आपसे

जो भी मिलेगा सिर आंखों पर क्यूंकि आप और हम एक समाज में रहते हैं और इस नाते हमारा इंसानियत और अपनेपन का रिश्ता तो है ही और,.....

अपनों से रिश्ता है तभी अपनों से अपेक्षा है,.

उपेक्षा होती ही इसीलिए है क्यूंकि अपेक्षा है,.

नहीं जीना मुझे रिश्तों को विरक्ति वाले भावों से,.

क्यूंकि रिश्ते तभी जीवित हैं जब रिश्तों से अपेक्षा है. .. प्रीति समकित सुराना

पाठकीय समीक्षा

पिंकी परुथी "अनामिका"

नमस्कार पाठकों🙏
नमस्कार अंतरा शब्द शक्ति परिवार🙏
अंतरा शब्द शक्ति वेब मेगज़ीन, अंक 5, बेहद सुंदर आवरण पृष्ठ, जिसे देखकर ठिठुरन महसूस हुई और बच्चे को सर्दी का लुत्फ उठाते देख मन आनंदित हुआ। इस अंक की उच्च स्तरीय संपादन, समिति और सामग्री ने पत्रिका को प्रभावशाली बनाया है।

सच है , दु:ख का सबसे बड़ा कारण दूसरों के साथ तुलना करना ही है, और जिस दिन अकेलेपन को एकांत समझ लिया, नकारात्मकता, सकारात्मकता में बदल जाएगी। सार्थक संदेश देता हुआ प्रीती सुराना जी का संपादकीय, निस्संदेह करोड़ों दिलों में ऊर्जा का संचार करेगा।

तत्पश्चात आदरणीय देवेंद्र सोनी जी की अंक 4 के लिए सार्थक समीक्षा पढ़ी । सीमित शब्दों में हर विधा पर टिप्पणी, अपने स्वयं के विचार, और आपकी बेबाक अभिव्यक्ति, बहुत आत्मबल बढ़ाती है।

क्रम में दीपावली विशेषांक पर आदरणीय ब्रजेश शर्मा "विफल" जी की समीक्षा आती है। आपकी स्पष्टवादिता, पारदर्शिता, एक एक शब्द सच्चाई बयां करता है। प्रीती जी के श्रम, समर्पण और लगन का प्रतिफल है यह पत्रिका, पूरी तरह सहमत हूं आपकी इस बात से आदरणीय ब्रजेश जी।

गीत, नवगीत विधा में गोकुल सोनी जी का गीत, *राष्ट्र चेतना*, ओजस्वी आव्हान है, बहुत प्रभावी गीत है। दीपिका जी का गीत, विदेश में बसे अपने पुत्र के प्रति संवेदनशील आग्रह है, उसके वापस लौट आने के लिए। प्रदीप सोनी"शून्य" जी का नवगीत , *अभिशापित नदी सा........*, दार्शनिक भाव लिए हुए, बेहतरीन रचना है। आत्म मंथन करा रही है यह रचना। लक्ष्मी खन्ना "सुमन" जी का *नगाड़ा*, राजनीतिक दलों के नगाड़े बजवा रही है यह रचना। जो चुनावों के पहले वादों के साथ और बाद में गठजोड़ बनने पर बजते रहते हैं, स्वार्थ सिद्ध होते रहते हैं। मोहन पुरी जी का बहुत सुंदर प्रेम से सरोबार गीत है। रंजना गुप्ता जी का *कंदील*, पंक्तिबद्ध दीपों के उजियारे की सार्थकता बयान करती है।

मीनाक्षी पारीख जी के हाइकु *आरज़ू* विषय पर सज रहे हैं।

हेमंत बोर्डिया जी की ग़ज़ल चार चांद लगा रही है। राजेश पुरोहित जी की ग़ज़ल मुहब्बत के रंग फैला रही है।

मणिबेन द्विवेदी जी की ग़ज़ल एक आशिक के मुहब्बत में बर्बादी के फसाने सुना रही है।

जयकृष्ण जी की ग़ज़ल जीवन के विभिन्न रंग दिखा रही है।

शिरिन जी के बेहतरीन मुक्तक बांधे रखे हुए हैं। रागिनी जी के मुक्तक बहुत खूबसूरत हैं और महक रहे हैं।
नीरा जैन जी की कविता, *बस ये ही है प्यार*, कविता नागर जी की *स्वांग*, अनिता मंदिलवार जी की *मुझे तुम याद आए*, मंगला रस्तोगी जी की *रेलवे ट्रैक*, विनिता जी की *आयी शाम सुहानी*, उपासना पांडा जी की *आकांक्षा*, सुरेखा"स्वरा"की *एक प्यारी सी सुबह*, सतरंगी इन्द्रधनुष सी सुंदर आभा बिखेर रही है पत्रिका में।
अरुण खरे जी की कविता देश के नौजवानों पर व्यंग्य है।
मनोज जैन"मधुर" जी के दोहे शीत ऋतु के आगमन की सुगंध और सौगात हैं। भावना तिवारी जी के दोहे मनभावन हैं।
मनमोहन भाटिया जी की कहानी *यादें*, दिल को छू गई। भाई बहन के प्रेम, जिंदगी की हकीकतें, समझौते,सब कुछ सिलसिलेवार गुजरता गया।
नीरजा मेहता जी की कहानी *भक्त की परीक्षा*, भगवान के प्रति गहरी आस्था, भक्त की परीक्षा, और भगवान का भक्त के लिए करुणा का भाव, बहुत सुंदर तरीके से दिखाया गया है।
विनोद कुमार जैन जी की अनुदित लघुकथाएं सार्थक संदेश देती हूई, शिक्षाप्रद हैं।
पूनम झा जी की लघुकथा *अदृश्य फफोले*, मां का संतान के लिए ममत्व को दिखाती है।
अनिल नागर जी की लघुकथा *वो सो गए*, मानवीय संवेदनाओं की अतिवृष्टि है। हृदय को बहूत अंदर तक छू लिया इस रचना ने।
कल्पना मिश्रा जी की लघुकथा *अब और नहीं*, भावनात्मक प्रतिरोध और साहस की कहानी है।
कमल मेहरोत्रा की *अंजाम*,बेहतरीन सृजन है।
अर्पण जैन "अविचल" का आलेख , *पत्रकारिता: शैशव से भविष्य तक*, एक संपूर्ण लेख है। इस आलेख को बनाने में उनकी मेहनत और समर्पण और उत्साह साफ दिखाई देता है।
राधा गोयल जी का संस्मरण, हिंदी भाषा के प्रति सम्मान और निष्ठा को प्रदर्शित करता है।
प्रीती सुराना जी द्वारा , प्रीती अज्ञात (हस्ताक्षर ब्लागर की संस्थापक), इस मैगज़ीन को उच्च स्तरीय बनाता है।
अंत में मुकेश दुबे जी द्वारा प्रख्यात लेखक पंकज जुबीर जी की पुस्तक *चौपड़े की चुड़ैलें*, पत्रिका को उच्च श्रेणी में ले जाने में सफल हुई है।
कुल मिलाकर एक उच्च स्तरीय पत्रिका है।आने वाले समय में यह नए आयाम स्थापित करेगी। अभी तो सिर्फ शुरुआत है। *अंतरा शब्द शक्ति*, मेरे हृदय के बहूत करीब है। यहां नवोदितों को सम्मान मिलता है और उड़ने के लिए आकाश।
ईमानदारी, समर्पण, उदारता, उन्माद, उत्कर्ष, नैतिकता का समावेश है *अंतरा शब्द शक्ति वेब मेगज़ीन*। सलाहकार समिति में शामिल करने के लिए बहूत बहूत धन्यवाद आदरणीया प्रीति सुराना जी। मेरी अनंत शुभकामनाएं।
पिंकी परुथी "अनामिका"

गीत-नवगीत

सोने जैसा जीवन

कैलाश सोनी सार्थक

सोने जैसा जीवन पाया
सोने जैसी काया है
पर नकली चीजें भाती है
ये लालच की माया है

बाहर देखे सदा बुराई
नही झांकता अपना मन
सूना सूना रहता देखा,
इसीलिए मन का आँगन
यही काम है अब मानव का
एक यही दुख छाया है

किसने कितना कहाँ कमाया
उसकी हर पल चिंता है
अपनी सबसे करे बढाई
नही उसे कुछ दिखता है
गीत गैर का बुरा बताए
अपना श्रेष्ठ बताया है

रोज बताता क्या क्या करता
कितना उसका नाम हुआ
मगर छुपाए कैसे करता
कैसे उसका काम हुआ
नकली जीवन है मानव का
नकली साधन भाया है

थोडा सा धन पास हुआ तो
बनता वो धनवान बडा
मात पिता घर उसके रोये
जिनके कारण हुआ खडा
एक नही ऐसे है लाखों
जिनने पाप कमाया है

गंदी नीयत गंदी नजरें
गंदा ही परिवेश हुआ
अपने गुण सारे भूला है
नकली अपना भेष हुआ
सोनी कहता इस मानव ने
नकलीपन अपनाया है

कैलाश सोनी सार्थक

गीत-नवगीत

तुम्हारा मन प्रिये

डॉ श्याम मनोहर सीरोठिया

झील में हँसते कमल सा,यह तुम्हारा मन प्रिये।
उम्र की कच्ची फसल सा,यह तुम्हारा मन प्रिये।।
बस रही मन में तुम्हारे,
नेह भीगी गन्ध है ।
कामनाएँ समर्पण कीं,
प्रणय का अनुबन्ध है।
अर्चनाओं के सुफल सा,यह तुम्हारा मन प्रिये।।
सूर ,मीरा के भजन या,
तुलसीकृत चौपाइयाँ ।
शेर ग़ालिब के नशीले,
मीर की रुबाइयाँ ।
प्रीत की पहली गजल सा,यह तुम्हारा मन प्रिये।।
देखने वाले न समझे,
मूक पीड़ाएँ कभी।
शाह कीं,मुमताज़ कीं हैं,
कैद गाथाएँ सभी।
संगमरमर के महल सा,यह तुम्हारा मन प्रिये ।।
जिसके संकल्पों का सम्बल,
ही रही आराधना ।
साध्य क्या उसको कठिन फिर,
है सफल हर साधना।
देव के आशीष फल सा,यह तुम्हारा मन प्रिये।।
अन्धकारों में अकेली,
झिलमिलाती सी किरण।
दूर जंगल में विरह का,
गीत गाये ज्यों पवन।
स्वाति के अनमोल जल सा,यह तुम्हारा मन प्रिये।।
झील में हँसते कमल सा, यह तुम्हारा मन प्रिये।
उम्र की कच्ची फसल सा,यह तुम्हारा मन प्रिये।।

डॉ श्याम मनोहर सीरोठिया

गीत-नवगीत

निर्वासित तुलसी

मनोज जैन मधुर

लगे अस्मिता
खोने अपनी
धीरे-धीरे गाँव।

राज पथों के
सम्मोहन में
पगडंडी उलझी।
निर्धनता
अनबूझ पहेली,
कभी नहीं सुलझी।
अनाचार के
काले कौवे
उड़ उड़ करते काँव।

राजनीति की
बाहें पकड़ीं
पकड़ लिया है मंच।
बंटवारा
बंदर सा करते
सचिव और सरपंच।
पश्चिम का
परिवेश जमाये
अंगद जैसा पाँव।

छोड़ जड़ों को निठुर
शहर की
बातों में आते।
लोकगीत को
छोड़ गीतिका
पश्चिम की गाते।
सीख रहीं हैं
गलियां चलना
आज शकुनि -से दाँव।

दंश सौतिया
झेल रहीं हैं,
बूढ़ी चौपालें।
अपनी ही जड़
लगीं काटने
बरगद की डालें।
ढूंढ रही निर्वासित
तुलसी
घर में थोड़ी छाँव।।

●

मनोज जैन मधुर

गीत-नवगीत

माँ

डॉ.अशोक गौतम

जब तक हैं माँ घर के अंदर ,रोशन कोना कोना है |
माँ की ममता से हर घर, हों जाता सोना सोना है ||

माँ की गोद है नर्म बिछौना- लोरी सुन सुन सोता हूँ|
माँ का आँचल जब ना मिलता,मैं जोर जोर से रोता हूँ ||
जब तक माँ ना आजाती है,सारे घर में रोना है ......

माँ का आँचल इतना बड़ा है ,जैसें नीला है अम्वर |
प्यार का सागर हरदम रहता ,माँ के हृदय के अंदर||
माँ की ममता जिसें मिलजाये,उसका जीवन सोना है...

बचपन होये या होये जवानी,जब चोट हमें लग जाती है |
इधर चोट लगते ही माँ की ,उधर छाती हिल जाती है ||
गीलें में माँ खुद सोती है ,हमकों सूखा देती बिछौना हैं.....

जिस बेटे के पास है माता ,वो सुख की दौलत पाता हैं |
माँ को दुःख पहुँचानें वाला , दर दर की ठोकरें खाता है ||
माँ की ममता के आगें ये , जग सारा लगता बोना हैं.....

माँ के दूध का कर्ज़ कोई, जग में नहीं चुका पाया |
सारे संकट दूर रहें , जब तक थी माँ की छाया ||
जिसने माँ का किया निरादर ,उसकों “घायल” होना है......

डॉ.अशोक गौतम

मुक्तक

किशोर पारीक "किशोर"

लिखता हूं मैं टूटा-फूटा श्री राधे।
पत्ता- पत्ता, बूटा- बूटा, श्री राधे ।
कुछ कहते हैं, व्यर्थ है कोई अर्थ नहीं।
जैसा भी है सच्चा-झूठा, श्री राधे।1।

मैं शब्दों के हार पिरोता, श्री राधे।
पत्नी होती पहली श्रोता, श्री राधे।
काव्य सरिता जब भी बहने लगती है।
दोनों खूब लगाते गोता श्री, राधे।2।

ना गिनते ना तोला करते, श्री राधे।
दाता ना ही बोला करते, श्री राधे।
रहमत बरसाते हैं झोली भर देते।
भक्तों पर दिल खोला करते,श्री राधे।3।

दुख ने दे दी फिर से दस्तक, श्री राधे।
हमने नवा दिया है मस्तक, श्री राधे।
मर्जी समझ कृष्ण की हमने बोल दिया।
रह लो दुख जी चाहो जब तक, श्री राधे।4।

किशोर पारीक "किशोर"

मुक्तक

श्वेता सिंह

तुम्हारे वास्ते कितनी सनम फ़रियाद कर आई,,
मरे जज्बात थे दिल में सभी के श्राद्ध कर आई,,
तुम्हें अब मुक्त कर छोड़ा परेशाँ तुम नहीं होना,,
विसर्जित अश्रु गंगा में तुम्हारी याद कर आई।1।

सुरक्षित गोद में माँ के मुझे स्थान मिलता है,,
पिता के बैठ चरणों में जगत का ज्ञान मिलता है,,
भटकना है जिन्हें भटकें यहाँ हर रोज़ मंदिर में..
हर इक आशीष में मुझको सदा भगवान मिलता हैं ।2।

हर अँधेरी रात में उजियार है मेरी क़लम
जालिमों के सामने हुंकार है मेरी क़लम
भावनाओं का बना सच के गले का हार है
देश द्रोही के लिये तलवार है मेरी कलम।3।

कभी जो टूट के बिखरे तो किधर जाओगे
आसमाँ वालों कभी तो जमी पे आओगे
जिनके अधरों पे मुहब्बत की प्यास रहती हो
उसको दौलत से भला क्या ख़रीद पाओगे।4।

श्वेता सिंह

ग़ज़ल

नीता सक्सेना

मासूम से रिश्तो का भी नाम नहीं होता
इस दिल की कहानी का इनज़ाम नहीं होता।

हम बात नहीं करते किस्मत के फ़साने की
टूटा जो कभी दिल तो इतमाम नहीं होता।

लिखते जो रहें हमदम ख़त तेरी मुहब्बत में
मिलता जो पता तेरा बेनाम नहीं होता।

मुस्कान सजा कर हम अश्को को छुपाते हैं
अश्को में मगर तेरा पैगाम नहीं होता।

कुछ ख्वाब हमारे हैं कुछ ख्वाब तुम्हारे हैं
ख्वाबों में कोई रिश्ता गुमनाम नहीं होता।

कुछ दूर सही मंजिल रस्ता भी अकेला है
मंजिल की तमन्ना में विश्राम नहीं होता।
गिरह का शेर

••••••••

खामोश चला करती यादों की रवानी का
आगाज़ तो होता है अंजाम नहीं होता।

••••••

नीता सक्सेना

ग़ज़ल

कवि राजेश पुरोहित

गजल गरीबों में ईश्वर जिसने खोजा है।
असल में वहीं करतार रहता है।।

योजनाओं का लाभ मिले उन्हें।
जो असल में हकदार रहता है।।

मेरे शहर में डेंगू ने पैर पसारे है।
हर कोई अब बीमार रहता है।।

घरों में अपनत्व नहीं रहा जबसे।
हर कोई यहाँ लाचार रहता है।।

करूँ किस तरह प्यार की बातें।
करना जिसमें इजहार रहता है।।

मतलब परस्ती में जो जीते यहाँ।
मेरी नज़र में धिक्कार रहता है।।

वतन की खा राग दुश्मन के गाते।
वो शख्स अक्सर गद्दार रहता है।।

पाक तेरी हरकत घिनोनी होती है।
तेरे भीतर छुपा मक्कार रहता है।।

बुजुर्गों की जहां खिदमत होती है।
"पुरोहित "वही परिवार रहता है।।
कवि राजेश पुरोहित भवानीमंडी

ग़ज़ल

बन्टी दुबे "गीत "

शरारों को हवा देकर जरा शोले बनाओ तो
मिलेगी राह हर रौशन चरागे दिल जलाओ तो ।

लगाकर सात पर्दों को छिपे बैठे हो बुत बनकर
कभी पर्दे के पीछे की हकीकत को दिखाओ तो ।

तेरे आने तेरा जाने की मिलती है हमें आहट
गुजरते हो भले बेशक मगर छूकर भी जाओ तो ।

झरेंगे फूल हर इक शाख से कदमों मे तेरे भी
जरा सा मुस्कुरा कर रस्म उल्फ़त की निभाओ तो ।

कोई तस्वीर सुंदर सी बनेगी अपने ही हाथों
मगर तकदीर को सपनों के रंगों से सजाओ तो ।

कभी होंगे सितारे चाँद भी तेरी हथेली पर
जमीं से आसमाँ की दूरियों को आजमाओ तो ।

बन्टी दुबे "गीत"

गज़ल

सुनीता लुल्ला

हम बशर जो बन गए ,कुछ दिल के आलों में रहे
और पत्थर जो बने , जा के शिवालों में रहे।

ग़मजदों ने पा लिया था ,हमसे कुछ अपना वजूद
हसरतों ने खो दिया , लेकिन मलालों में रहे।

उनके नग्मों ने कभी गाया नही हमको , चलो
हम अदब के शौक वालों के रिसालों में रहे।

पुरसुकूँ सी जिन्दगी हमको न मिल पायी कभी
हो गया जो सामना उनसे ,बवालों में रहे।

ख्वाब बन कर रह न पाये ,उनकी आँखों में कभी
ग़म गलत करने को उनका ,मय के प्यालों मे रहे।

जल रहे थे सर से पा तक ,धूप थी उन्वान पर
छांह में फिर भी न आये , पर उजालों में रहे।

सुनीता लुल्ला

नज़्म

शिरीन भावसार

बेवफाई न थी सबब तेरा जानता हूँ मैं|
इसे तक़दीर की कारगुजारी मानता हूँ मैं|

न थी तक़दीर की रूबरू होती तू मेरे
साजिशें की कितनी ज़माने ने जानता हूँ मैं|

हर लम्हा इस तरह गुजरता है बिन तेरे
जैसे जिंदगी का मातम मनाता हूँ मैं|

यादो के काफिले चलते है साथ राहो में मेरे
अब तेरी गली से न गुजरूंगा कभी जनता हूँ मैं|

दो फूल ही चढ़ा जाना जनाज़े पर मेरे "शिरीन"
कि अकेला ही तड़पूँगा कब्र में जानता हूँ मैं|

शिरीन भावसार, इंदौर (म. प्र.)

नज़्म

कैलाश बिहारी सिंघल "केसू"

ये कैसा शहर है, ये कैसा शहर है...?
हवाओं में घुलता ये कैसा ज़हर है..?

प्यारी सी चिड़िया बनाती है घर क्यूँ..?
बहारों की चीखों से दहला शज़र है..!

फूलों को चुभते है शबनम के मोती..
काँटों की साज़िश का कैसा नगर है..?

बहारों के वादे ये विनाशों के बादल..
विकासों के दावों का तीसरा प्रहर है..!

सागर की बाहों में नदिया है पागल..
ये लम्हा सदी पर क्यूँ ढाता कहर है..?

सियासी विवादों से "केसू" है घायल..?
आंखों के प्यालों से निकली नहर है..!

कैलाश बिहारी सिंघल "केसू"

लघुकथा

अंध विश्वास

नीरज जैन

गणेशी लाल की आर्थिक स्थिती दिन पर दिन बुरी होती जा रही थी , बेटी घर छोड़ कर भाग गयी थी और बेटा कई बुरे व्यसनों में पड़ कर अपना भविष्य खराब कर रहा था |

तभी पड़ोसन लक्ष्मी ने सलाह दी कि एक तांत्रिक हैं जो घर की शांति का उपाय बताते हैं |

तात्रिक महाशय ने पूरे घर का मुआयना कर के बताया कि दरवाजे की चोखट पर काले घोड़े की नाल लगाई जाये दक्षिणा के 1500 रुपये ले कर जाते जाते घोड़े वाले का पता बता गये |

1200 रुपये में नाल खरीदी गयी जो खुशियों की गारंटी थी |

घोड़े वाला ख़ुशी खुशी घर जा रहा था हाथ में चार पैकेट डार्क ब्लैक हेअर कलर के थे,... |

नीरज जैन

लघुकथा

सीख रक्तदान की

देवेंन्द्र सोनी, इटारसी

छोटे बेटे की बीमारी से परेशान सुनीता जैसे तैसे अपने दिन काट रही थी । मजदूर पति सुरेश सुबह ही दिहाड़ी के लिए निकल जाता । मजबूरी थी उसकी बीमार बेटे को अनपढ़ पत्नि के भरोसे छोड़ कर जाना । खुद भी ज्यादा कहाँ पढ़ा - लिखा था वह। आठवीं पास को भला आज के जमाने में कौन पूछता है । कई जगह नोकरी के लिये कोशिश करने के बाद मजदूरी करने में ही उसने अपनी भलाई समझी। परिवार का पेट तो पालना ही था उसे । पत्नि भी मजदूरी करती थी संग -संग तो जैसे तैसे गुजारा हो जाता था पर अब बेटे को न जाने यह कौन सी अंग्रेजी बीमारी हो गई कि रोज ही खून की बॉटल लगवाओ । गरीब को कोई अपना खून क्यों देने लगा । इतना पैसा भी नही कि खरीद सके । बस अब तो सब भगवान की दया पर है । जिए या मरे । यही सोचकर वह दिहाड़ी पर जाने लगा और पत्नि सुनीता घर रहकर बेटे की देखभाल करती ।एक दिन ज्यादा हालत बिगड़ती देख वे दोनों बच्चे को लेकर फिर सरकारी अस्पताल पहुंचे लेकिन खून न मिल सका । सुनीता तो अपने आँचल में बेटे को समेटे रोये ही जा रही थी । उसे रोता देख समीप बैठे एक नोजवान ने उससे कारण पूछा और अपना रक्त देकर उन्हें थोड़ी राहत दी, पर होनी को जो मंजूर था वही हुआ । बच्चा नहीं बचा। मां का रूदन थमने का नाम नही ले रहा था मगर तभी सुरेश ने दुःखी ह्रदय से मन ही मन उस नोजवान का आभार व्यक्त कर यह प्रण ले लिया कि अब से वह हर जरूरतमंद के लिए रक्तदान करेगा , चाहे उसकी जान ही क्यों न चली जाए।

रक्त के अभाव में बेटे की मौत और उस नोजवान के रक्तदान ने सुरेश को एक बड़ी सीख दी थी जो अब कई जिंदगियों को बचाने के काम आने के प्रण में बदल चुकी थी।

- देवेंन्द्र सोनी, इटारसी।

लघुकथा

आत्मविस्मृति

डॉ. मालती महावर बसंत.

एक स्कूल के अध्यापक रिटायर हो रहे थे. विद्यालय में उनकी विदाई समारोह आयोजित किया गया था. प्रधान अध्यापक और सभी अध्यापक कुर्सियों पर विराजमान थे. हमेशा की तरह लड़कों का शोर-गुल जारी था. शिक्षकों के चुप कराने के बावजूद लड़के चुप नहीं हो रहे थे. समय की कमी को देखते हूए प्रधान अध्यापक महोदय ने उसी स्थिति में कार्यक्रम प्रारम्भ करने का आदेश दे दिया.

एक छात्र ने उन रिटायर अध्यापक की प्रसंशा में एक तोता रटंत भाषण दिया. उसके पश्चात दो छात्राओं ने मिलकर कागज पर नजरें गड़ाए विदाई गीत गाया. विद्यालय के एक शिक्षक ने उनको माला पहनायी, जब कैमरा सामने आया. फिर विद्यालय के प्रधान अध्यापक ने मगरमच्छी आँसू बहाते हूए स्कूल के सूने होने का दुःख प्रकट किया.कार्यक्रम के अंत में रिटायर होने वाले अध्यापक महोदय ने बच्चों को आशीष वचन देना शुरू किया.

“बच्चों! मैं इस विद्यालय में पच्चीस वर्षों से जुडा रहा हूँ. मुझे इस बात का बड़ा दुःख होता है, कि शिक्षा का स्तर दिन-व्-दिन गिरता जा रहा है.अनुशासनहीनता-हीनता बढती जा रही है. लेकिन इस विद्यालय ने जिले में अपनी पढ़ाई और अनुशासन के मामले में नाम कमाया है.

मेरा आशीर्वाद है, कि तुम लोग खूब उन्नति करो. डॉक्टर, इंजीनियर बनो इसके लिए तुम्हें खूब म्हणत से पढना होगा, यदि तुम लोग पढ़ाई-लिखाई नहीं करोगे तो क्या बनोगे? सिर्फ मास्टर,इससे ज्यादा कुछ नहीं.इसलिए बड़ा आदमी बनना है तो मेहनत करनी पड़ेगी.

तालियों की गडगडाहट में भाषण समाप्त हो गया. कार्यक्रम के खत्म होते ही उस ओर भगदड़ मच गयी जिस ओर नाश्ते की प्लेटे राखी थी. उसी भगदड़ में एक लड़के को कहते सुना, “खुद ने तो कभी पढ़ाई में मेहनत नहीं की, तभी तो मास्टर बने और हम लोगों को उपदेश झाड गए."

डॉ. मालती महावर बसंत.

लघुकथा

परिचय

राजीव कुमार

राकेश साहेब,आपके बंगले का फूल-पौधा आकर्षक और सुंदर हो गए हैं।महीनों पूर्व वीरान था।"
दूर बुजुर्ग के तरफ इशारा कर ,"ये सब इनके बदौलत ही है।नर्सरी से नए पौधे यही लाते हैं।"
"साधारण धोती मगर साफ़ ,एक भी सिलवट नहीं । आदमी जहीन हैं।तन्मयता से गुड़ाई और छटाई कर रहे हैं।नई माली हैं न?"उत्तर का प्रतीक्षा किए बिना,"आप छुपे रुस्तम निकलें।"
धीरे से,"गाव से आए हैं।"
"ओ माली काका,इधर सुनिएगा।"
राकेश साहेब असहज हो बरामदे से उठ कमरे की ओर जाने लगें,तब तक मेहता साहेब बुजुर्ग के पास पहूँच गए।
"पास के बंगलें में पौधों की देखभाल में एक घंटे समय दें।पारिश्रमिक उचित देंगे।"
तीखे स्वर में,"राकेश साहेब ,मेरा बैग निकाल दें।अब आपका पानी भी कंठ से नीचे न उतरेगा। इसी वक्त गाव निकलूँगा।"
मेहता साहेब अवाक!"माफ़ करें माली चाचा,इच्छा जाने बिना प्रत्यक्ष कह दिया।"
"आप माफी क्यों मांगते हैं?"इशारा कर,"उच्च सरकारी नौकरी पा ये जमीं भूल गए हैं।शर्म इन्हें आनी चाहिए,जो बाप को माली के रूप में परिचय दे रहे हैं।"ये कहते हुए आँखों से बरसात होने लगी।

राजीव कुमार

दोहे

जयराम जय

धरती - परती हो गई, जल के स्रोत विलीन।
प्रकृति दुखी हो सोंचती, है कितनी वह दीन ।1।

माथे पर सिलवट पड़ी, कहॉ गये सब बृक्ष।
पाहन की छत तप रही, तपन ही देता कक्ष।2।

कंकरीट के महल हैं, चिंता की जागीर ।
ये- सी कूलर भी नहीं, मन की हरते पीर।3।

अवसादों के दौर में, रात -दिवस बेचैन ।
सुला न पाता चैन से,ह्विस्की-बियरी कैन।4।

भरी दुपहरी सोचती, कहॉ नींम की छॉव ।
गहन उदासी झेलते, उजडे़-उजडे़ गॉव ।5।

सूरज बैठा सर चढ़ा, आग बरसती घूप।
सूखे पोखर ताल नद, सूखे गहरे कूप ।6।

थल-जल नभचर सोचते हो करके गमगीन।
टुकड़े -टुकड़े हो गई, अरमानों की मीन ।7।

पास हमारे क्या बचा, छोड़ हृदय की पीर।
वापस वे दिन आयेंगे,ले संकल्प अधीर।8।

जयराम जय

दोहे

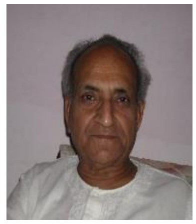

कुमार रवींद्र

नदी-किनारे कल मिला हमें गीत इक, मित्र।
उसकी आँखों में दिखा एक पुराना चित्र।1।

बरसों-बरसों पूर्व हम आये थे उस घाट।
बनी नहीं थी तब वहाँ राजाजी की लाट।2।

एक बड़ा वटवृक्ष था जहाँ बनी अब लाट ।
सिकुड़ा-सिमटा नहीं था, मित्र, नदी का पाट।3।

आती थी हर वक़्त तब जलपाखी की कूज।
अब भी हिरदय में कहीं कूज रही वह गूँज।4।

नदी-पार हमको दिखा टूटा एक मकान।
कभी वहीं घटवार की होती थी दूकान।5।

मन में उठा उछाह फिर बहुत दिनों के बाद।
भीतर सागर नेह का - उसकी आई याद।6।

लहरों-लहरों हम तिरे - जल में भीगे खूब ।
झुर्री-झुर्री देह की मिटी थकन औ' ऊब।7।

छुआ गीत ने साँस को - हुए मौन सब शोर ।
लय-छन्दों ने रचा फिर अचरज एक अछोर।8।

कुमार रवींद्र

हाइकु

पूनम राजेश तिवारी

ये शुद्ध हवा,
तुलसी का प्रवाह,
दुर्गुण स्वाह।1।

अशुद्धता से,
तुलसी है बचाती,
मेरे घर को।2।

पूज्यनीय हो,
मोरी मैया तुलसी,
आशीष देना।3।

तुलसी मैया,
हरी भरी रहना,
मेरे अंगना।4।

पावन धाम,
तुलसी का है वास,
जंहा पर भी।5।

तेरी महिमा,
पुरातन काल से,
तुलसी मैया।6।

तुलसी पेड़,
फायदे हैं अनेक,
मान विवेक।7।

धरा महान,
मै करु गुणगान,
मां के समान।8।

गोद में सदा,
करती नहीं जुदा,
रक्खे धरा मां।9।

ममतामयी,
धीर सहनशील,
शीतल पृथ्वी।10।

जीवन दायी,
धरा सी होती माई,
साथ निभाती।11।

पूनम राजेश तिवारी

हाइकु

नीरजा मेहता

सों का राजा
रति में डूबा मन
श्रृंगार रस।1।

हसित हास
हो आनंदानुभूति
है हास्य रस।2।

मन में शोक
दुःख की अनुभूति
करुण रस।3।

दिलाता क्रोध
कोपविष्ट आकृति
है रौद्र रस।4।

देता उत्साह
पौरुष को जगाता
है वीर रस।5।

मन में भय
हैं भयानक रस
बुरी आशंका।6।

घृणा जगाये
अमर्यादित कार्य
वीभत्स रस।7।

विस्मित मन
आश्चर्य भाव होता
अद्भुत रस।8।

होता निर्वेद
उत्तम है प्रकृति
है शांत रस।9।

अनन्य भक्ति
भाव की मधुरता
है भक्ति रस।10।

वत्सल भाव
है नैसर्गिक स्नेह
वात्सल्य रस।11।

"नीरजा मेहता"

कविता

मैं तुम में फ़ना

प्रिया वर्मा

एक रोज़ उसने कहा
मुझपे यक़ीन रखना
मान लिया ....
दिन दिन गहरा होता गया
मेरा भरोसा उस पर
चाहते या न चाहते
यक़ीन के सहारे
खुद को टिकाए रही
क्या फ़र्क़ था कि
उसे पता था भी कि न था.....
किस कदर
जाने क्यों बेहद
ये सालों से जमी बर्फ
पल पल गलती गई
मोम बन पिघलती गई
मैं सारी बदलती गई
भीतर ही खुद को सिलती गई
उसकी आत्मा में घुलती गई
ज्यों मिसरी बदल जाती है
दूध में मिठास बन के
अपना अस्तित्व घोल डाला
खुद को मिटा डाला
फिर एक दिन
वो मुझसे पूछ बैठा
तुम कहाँ .....?
खामोशी से
मैं कह भी न सकी
उस को .....
मैं तुम में फ़ना

प्रिया वर्मा

कविता

ऐसा मजहब चलाएं

राकेश धर दिवेदी

चलो
ऐसा मजहब चलाएं
जहां इंसानियत के गीत गाए जाएं
दर्द होरी के आंगन में उतरा हो
आंखें जुम्मन की भर आए
रामचरित मानस की चौपाइयां
और कुरान के पैगाम
जहां साथ बैठकर
सुनाए जाएं
चलो
ऐसा मजहब चलाएं
जहां इंसानियत के गीत गाए जाएं।
ईद की सिवइयां दिवाली के दीये
साथ मिल के खिलाई-सजाए जाएं
सपने अकबर ने जो आंखों में पाले
अमर की नजरे से देखे जाएं
चाहे मदरसे हों या गुरु आश्रम
गीत देशभक्ति के केवल गाए जाएं
चाहे गुरुद्वारा हो या गिरजाघर
केवल नफरत समाप्त करने के संदेश आएं
केवल एक सपना आंखों में पालें
सबसे बेहतर आंखों में पालें
सबसे बेहतर हो हिन्दुस्तान वाले
केवल तरक्की और विकास के
सपने आंखों में पाले जाएं
झंडा ऊंचा रहे हमारा
ये सपने लेकर जिंदा रहें
और इसी सपने को पूरा
करते हुए खप जाएं
चलो
ऐसा मजहब चलाएं
जहां इसांनियात के गीत गाए जाएं।

राकेश धर दिवेदी

कविता

लकीरें

आनन्द कुमार राय

टेढ़ी मेढ़ी लकीरें हैं मेरे माथे पर जितनी
ज़िन्दगी में भी कम नहीं है उतना ही कुछ।
वर्षों से जिसे ढूँढता... चला आया हूँ मैं
पास होकर भी वही अब पास नहीं है
कहने को तो कहा मैंने कहाँ तक
पर उसे लगा की बात यह
कुछ ख़ास नहीं है।

अज़नबियत का एहसास -- मुझे ख़ुद से,
ख़ुदा से या मिला है उससे।
हतास, हतभाग्य - सा मैं, कोसता हूँ।
फिर, टूटन के हर पल में
निर्बुद्धि -सा, अनायास कुछ खोजता हूँ।

बिलकुल निराश, हताश, बेबस, नाउम्मीद.....
मेरे रास्ते बन्द पड़ गए हैं
थकित, श्रमित, व्यथित
और शायद पतित (दी गई संज्ञा)
पग मेरे, मन्द पड़ गए हैं।

आँखों में ओझल होता
कुंद, धुंध होता ---
रौशनी पर नज़रबन्द पड़ गए हैं।
अवाक्, जिंदगी और माथे के
टेढ़ेपन की तरह ---
शरीर स्थिर, वही गड़ गये हैं,
जड़ गये हैं।

आनन्द कुमार राय

कविता

आहट सर्द मौसम की

मीनाक्षी सुकुमारन

हो रही आहट
सर्द मौसम की
सुबह
कोहरे से ढकी
दिन
धूप से सिकी
रात
रजाई में दुबकी
होंगी यूँ
नर्म सर्द सी सुबहें, दिन और रात।।
वहीं होगी
खुश्बू
सरसों के साग संग मक्की की रोटी
गाजर का हलवा
गजक, रेवड़ी की मिठास
मूंगफली , काजू ,बादाम ,किशमिश की
हो रही *आहट*
सर्द मौसम की
ऊनी कपड़ों संग
स्वादिष्ट व्यंजनों की ।।
वहीँ सड़क के
किनारे फुटपाथों की
काँपने लगी रूह
पा आहट सर्दी की
कैसी कटेंगी राते लम्बी
झीनी सी चादरों में
कैसे झेलेंगी सर्द हवा के
थपेड़े ये कच्ची झुगियाँ
कैसे कुछ लकड़ियाँ
देंगी सेक बच्चों के कोमल तन
और काँपते बुढ़ापे को
हो रही *आहट*
सर्द मौसम की
यूँ कहीं आनंद तो
कहीं सज़ा ।।
...
मीनाक्षी सुकुमारन

कविता

आसमान

अदिति रूसिया

काटो न पर तुम उनके
आशाएँ पूरी करने दो
नील गगन में बेटियों को
आसमान में उड़ने दो ।

प्यारी बिटिया रानी को
चहकने दो चिड़िया सी,
चाँद की चाँदनी सी स्वच्छ
आसमान में उड़ने दो।

देश की हैं आन बेटियाँ
माँ पापा की शान बेटियाँ,
पर ना काटो गर्भ में इनके
आसमान में उड़ने दो।

ऊँची उड़ान ज़रा भरने दो
देश का नाम रोशन करने दो ,
पढ़ लिख आगे बढ़ने दो
आसमान में उड़ने दो ।

अदिति रूसिया

कविता

जानता हूँ,..

अजय जैन 'विकल्प'

मोहब्बत,अजीब तिलिस्म है..जानता हूं,
पर अब भी इश्क को 'इबादत' मानता हूं।

आता है बस फ़ना होने का हुनर दिल को,
तोड़ते हैं दिल कैसे,भला कहाँ जानता हूं।

वो हो दिलफरेब तो हों,मुझे क्या उनसे,
बस अपनी चाहत को ही पहचानता हूं।

जो उड़ते हैं बेवफा हो,रोते हैं तन्हा,
दिल मेरा दरिया है,बस बहना जानता हूं।

कहाँ से लाऊं अब वो ख़्वाबों की हक़ीक़त,
बस तू हाथ मेरा थाम ले,यही तो चाहता हूं।

अजय जैन 'विकल्प'

कहानी

काश ! न पाला होता तोता,..

मुकेश दुबे

प्रोबेशनर था उन दिनों आईसीआई कम्पनी में। स्टॉक व अकाउंटिंग की दक्षता के लिए इन्दौर भेजा था कम्पनी ने। एम.वाय. के सामने जावरा कम्पाउंड उस वक्त की पॉश कॉलोनी में शुमार था।

कम्पनी के स्टॉकिस्ट ने मेरे रहने की व्यवस्था उसी जगह करवा दी थी।

उस बिल्डिंग को मामी का मकान कहते थे सभी। तीन मंजिला भवन का निचला हिस्सा फार्मास्यूटिकल कम्पनिओं का गोदाम था। बाकी दो मंजिलें किरायेदारों के बीच बँटी थीं। मामी दूसरे तल पर एक टू बीएचके में रहती थीं बाकी पेइंग गेस्ट व इंडीपेंडेंट किरायेदार थे।

मुझे थर्ड फ्लोर पर दो कमरों का अपार्टमेंट मिला था। अकेले आदमी की जरूरत के मान से बड़ा था फिर भी दो साल निकालने के लिए बुरा नहीं था।

मैंने सिर्फ सुबह की चाय व ब्रेकफास्ट लिया था, दोपहर व रात के भोजन का समय निर्धारित ही नहीं था। अक्सर बाहर होता था।

उस रोज़ सुबह से ही मौसम बिगड़ा था। दिसम्बर में बरसात ने खासी ठंडक घोल दी थी और धूप दो दिनों से नदारद थी। सियागंज से देवास नाके जाकर स्टॉक वैरीफाई करना था। मेरा असिस्टेंट बाइक से लेकर जा रहा था। रीगल चौराहे के आगे उसकी बाइक फिसली और मेरा दाहिना हाथ बचने की कोशिश में घायल हो गया।

डॉक्टर ने एक्स-रे देखा, कलाई की हड्डी जगह से सरक गई थी। पलस्तर लगा कर दर्द कम करने की गोली दे दी थी।

मामी ने देखा तो परेशान हो गईं। "यो कंई कर लियो नाना... अब अकेला मनक कईं करेगो.... बूशट की बटन भी नी खोली जायेगी नी नहा धो सकेगो। घणों तोतो पाल लिया छोरा तू ने। "

समस्या तो थी मगर कोई चारा भी नहीं था।

मामी ने खोज लिया था रास्ता। थर्ड फ्लोर की शर्मिष्ठा के साथ आईं थी। बैंक में थी शर्मिष्ठा। पेइंग गेस्ट थी मामी की।

नाना तू परेसान मत हो। या छोरी म्हारी बेटी सी है। अब परदेस में कोई तो हो थारी देखभाल सारू। मैं कहता रहा मुझे जरूरत नहीं मगर

मामी कब मानने वाली थी।
अगले दिन एक और मुसीबत आई। चोट व दर्द की वजह से बुखार आ गया।
शर्मिष्ठा ने आकर चाय पिलाई और बुखार की दवा भी लाई। उसके बाद तो स्पंजिंग से खाना खिलाना... कुशल नर्स की तरह ध्यान रखती थी। दो दिन बाद बुखार नहीं रहा न दर्द था फ्रेक्चर में, एक नया दर्द महसूस कर रहा था शर्मिष्ठा के न रहने पर।
जब यह मालूम हुआ उसने तीन दिन की छुट्टी ली थी मेरी खातिर, अहसान का बोझ बदलने लगा भावनात्मक लगाव में।
जिस्मानी परेशानियाँ कम होती जा रही थीं मगर शर्मिष्ठा जुड़ती जा रही थी दिल के साथ।
मामी के मुताबिक तोता पाला था तब पिंजरा भी जरूरी था तोते के लिए।
शर्मिष्ठा बन गई पिंजरा और एक बीमार बेचारा बन गया मिट्ठू... मामी की थमाई हरी मिर्च कुतरता है और सी... सी... करता है।
अब पछताए होत का जब तोता कुतर गया खेत। कभी लगता है काश.. न पाला होता तोता, फिर दिल कहता है न पाला होता तोता तो शर्मिष्ठा साथ नहीं होती। जब भी दिसम्बर में घटा छाती हैं, बोलने लगता है तोता और जावरा कम्पाउंड की यादें बरस जाती हैं। भीगते-सूखते गुजर गये तीस साल तोते के साथ।

©मुकेश दुबे

कहानी

"एक चुटकी ज़हर रोजाना"

अश्विनी कुमार चौबे

आरती नामक एक युवती का विवाह हुआ और वह अपने पति और सास के साथ अपने ससुराल में रहने लगी। कुछ ही दिनों बाद आरती को आभास होने लगा कि उसकी सास के साथ पटरी नहीं बैठ रही है। सास पुराने ख़यालों की थी और बहू नए विचारों वाली।

आरती और उसकी सास का आये दिन झगडा होने लगा।

दिन बीते, महीने बीते. साल भी बीत गया. न तो सास टीका-टिप्पणी करना छोड़ती और न आरती जवाब देना। हालात बद से बदतर होने लगे। आरती को अब अपनी सास से पूरी तरह नफरत हो चुकी थी. आरती के लिए उस समय स्थिति और बुरी हो जाती जब उसे भारतीय परम्पराओं के अनुसार दूसरों के सामने अपनी सास को सम्मान देना पड़ता। अब वह किसी भी तरह सास से छुटकारा पाने की सोचने लगी.

एक दिन जब आरती का अपनी सास से झगडा हुआ और पति भी अपनी माँ का पक्ष लेने लगा तो वह नाराज़ होकर मायके चली आई।

आरती के पिता आयुर्वेद के डॉक्टर थे. उसने रो-रो कर अपनी व्यथा पिता को सुनाई और बोली - “आप मुझे कोई जहरीली दवा दे दीजिये जो मैं जाकर उस बुढ़िया को पिला दूँ नहीं तो मैं अब ससुराल नहीं जाऊँगी...”

बेटी का दुःख समझते हुए पिता ने आरती के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा - “बेटी, अगर तुम अपनी सास को ज़हर खिला कर मार दोगी तो तुम्हें पुलिस पकड़ ले जाएगी और साथ ही मुझे भी क्योंकि वो ज़हर मैं तुम्हें दूंगा. इसलिए ऐसा करना ठीक नहीं होगा.”

लेकिन आरती जिद पर अड़ गई - “आपको मुझे ज़हर देना ही होगा ....

अब मैं किसी भी कीमत पर उसका मुँह देखना नहीं चाहती !”

कुछ सोचकर पिता बोले - “ठीक है जैसी तुम्हारी मर्जी। लेकिन मैं तुम्हें जेल जाते हुए भी नहीं देख सकता इसलिए जैसे मैं कहूँ वैसे तुम्हें करना होगा ! मंजूर हो तो बोलो ?”

“क्या करना होगा ?”, आरती ने पूछा.

पिता ने एक पुडिया में ज़हर का पाउडर बाँधकर आरती के हाथ में देते हुए कहा - “तुम्हें इस पुडिया में से सिर्फ एक चुटकी ज़हर रोज़ अपनी सास के भोजन में मिलाना है।

कम मात्रा होने से वह एकदम से नहीं मरेगी बल्कि धीरे-धीरे आंतरिक रूप से कमजोर होकर 5 से 6 महीनों में मर जाएगी. लोग समझेंगे कि वह स्वाभाविक मौत मर गई.”

पिता ने आगे कहा -“लेकिन तुम्हें बेहद सावधान रहना होगा ताकि तुम्हारे पति को बिलकुल भी

शक न होने पाए वरना हम दोनों को जेल जाना पड़ेगा ! इसके लिए तुम आज के बाद अपनी सास से बिलकुल भी झगडा नहीं करोगी बल्कि उसकी सेवा करोगी।

यदि वह तुम पर कोई टीका टिप्पणी करती है तो तुम चुपचाप सुन लोगी, बिलकुल भी प्रत्युत्तर नहीं दोगी ! बोलो कर पाओगी ये सब ?"

आरती ने सोचा, छः महीनों की ही तो बात है, फिर तो छुटकारा मिल ही जाएगा. उसने पिता की बात मान ली और ज़हर की पुडिया लेकर ससुराल चली आई.

ससुराल आते ही अगले ही दिन से आरती ने सास के भोजन में एक चुटकी ज़हर रोजाना मिलाना शुरू कर दिया।

साथ ही उसके प्रति अपना बर्ताव भी बदल लिया. अब वह सास के किसी भी ताने का जवाब नहीं देती बल्कि क्रोध को पीकर मुस्कुराते हुए सुन लेती।

रोज़ उसके पैर दबाती और उसकी हर बात का ख़याल रखती।

सास से पूछ-पूछ कर उसकी पसंद का खाना बनाती, उसकी हर आज्ञा का पालन करती।

कुछ हफ्ते बीतते बीतते सास के स्वभाव में भी परिवर्तन आना शुरू हो गया. बहू की ओर से अपने तानों का प्रत्युत्तर न पाकर उसके ताने अब कम हो चले थे बल्कि वह कभी कभी बहू की सेवा के बदले आशीष भी देने लगी थी।

धीरे-धीरे चार महीने बीत गए. आरती नियमित रूप से सास को रोज़ एक चुटकी ज़हर देती आ रही थी।

किन्तु उस घर का माहौल अब एकदम से बदल चुका था. सास बहू का झगडा पुरानी बात हो चुकी थी. पहले जो सास आरती को गालियाँ देते नहीं थकती थी, अब वही आस-पड़ोस वालों के आगे आरती की तारीफों के पुल बाँधने लगी थी।

बहू को साथ बिठाकर खाना खिलाती और सोने से पहले भी जब तक बहू से चार प्यार भरी बातें न कर ले, उसे नींद नही आती थी।

छठा महीना आते आते आरती को लगने लगा कि उसकी सास उसे बिलकुल अपनी बेटी की तरह मानने लगी हैं। उसे भी अपनी सास में माँ की छवि नज़र आने लगी थी।

जब वह सोचती कि उसके दिए ज़हर से उसकी सास कुछ ही दिनों में मर जाएगी तो वह परेशान हो जाती थी।

इसी ऊहापोह में एक दिन वह अपने पिता के घर दोबारा जा पहुंची और बोली - "पिताजी, मुझे उस ज़हर के असर को ख़त्म करने की दवा दीजिये क्योंकि अब मैं अपनी सास को मारना नहीं चाहती ... !

वो बहुत अच्छी हैं और अब मैं उन्हें अपनी माँ की तरह चाहने लगी हूँ!"

पिता ठठाकर हँस पड़े और बोले - "ज़हर ? कैसा ज़हर ? मैंने तो तुम्हें ज़हर के नाम पर हाजमे का चूर्ण दिया था ... हा हा हा !!!"

"बेटी को सही रास्ता दिखाये,
माँ बाप का पूर्ण फर्ज अदा करे"

अश्विनी कुमार चौबे

बाल कहानी

संगति

कीर्ति प्रदीप वर्मा

बाजार से गुजरते हुए शर्मा जी ने तोते बिकते हुए देखे , तो ठिठक गए।

विचार आया क्यों ना सोनू के लिए तोता खरीदा जाए।

सात वर्षीय सोनू हमेशा जिद करता था तोता पालने की, अच्छा है उसका मन भी लगा रहेगा और बाहर भी नहीं भागेगा।

तोतों की जोड़ी लेकर

शर्मा जी ज्यों ही घर पहुंचे सोनू की खुशी का ठिकाना ना था। दोनों पिंजरे आमने सामने टांग दिए गए।

सोनू झट उनके लिए हरी मिर्ची और चने की दाल आदि ले आया।

पापा यह कब बोलेंगे?

सोनू ने सवाल किया, पापा बोले अभी नए हैं, इसलिए डरे हुए हैं कल सुबह उठोगे तो यह बोलेंगे

सोनू को तो जैसे रात भर नींद ही ना आयी।

सुबह उठा झट पिंजरों के पास पहुंच गया ।

तुरंत एक तोता बोला "राम राम"

अरे सोनू तो खुशी से नाचने लगा

सोनू भी ताली बजा बजा कर चिल्लाने लगा "राम राम" "राम राम "

वह तुरंत दूसरे तोते की ओर बढ़ा ज्यों ही मिर्ची उसकी ओर बढ़ाई तोता बोला "आ गया हरामखोर" "आ गया हरामखोर" सोनू का चेहरा उतर गया।

सुनकर पापा मम्मी भी दौड़े आए यह कैसा तोता?

सोनू रुआंसा हो गया, मम्मी ने उसे समझाया बेटा

यह गंदे माहौल से आया होगा। अब यह अपने दोस्त की बात सुनेगा तो सीख जाएगा।

सोनू दिनभर उसे "राम-राम" "राम-राम" बोलना सिखाने लगा।

वह भी कुछ दिनों में "राम-राम" बोलना सीख गया अब तो दोनों मिलकर सुबह सुबह राम राम की रट लगाने लगे और सोनू उनकी बोली सुन ताली बजाता।

यह है संगत का असर ।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

बाल कहानी

साथ- साथ

राजेन्द्र श्रीवास्तव

तेजिन्दर, एरिक, अयाज और महिपाल चारों पक्के दोस्त थे। उम्र भी चारों की लगभग बारह-तेरह बर्ष रही होगी। सबेरे से शाम तक सदैव साथ-साथ ही रहते। मजाक में भी कभी इनको आपस में उलझते किसी ने नहीं देखा। पढ़ाई, खेलकूद, गीत नृत्य आदि सभी गतिविधियों में इन चारों में से सभी या कोई न कोई अवश्य ही विजेताओं की सूची में रहता। सारा स्कूल इन चारों को उनके नाम के अंग्रेजी के पहिले अक्षर से मिलकर बने शब्द टीम TEAM के नाम से बुलाता।

एक दिन इनकी ही कक्षा में एक नये विद्यार्थी ने एडमिशन लिया।उसका नाम गुरजीत था। उसके पिता किसी अच्छी कम्पनी में मैनेजर थे। और महिपाल की कालोनी में ही किराये से रहने लगे थे। एक ही कालोनी में रहने के कारण महिपाल और गुरजीत की भी दोस्ती हो गयी।

महिपाल के तीनों मित्रों को गुरजीत का व्यवहार पसंद नहीं था। वह दूसरों से झगड़ता रहता, काॅपी किताब के पन्ने फाड़ कर हवाईजहाज़ बनाकर उड़ाता, ब्लैकबोर्ड पर कुछ भी लिख देता, और अक्सर अपनी पाॅकेट मनी का दिखावा करता। कई बार सिगरेट पीते हुये भी देखा गया। एक दिन तेजिन्दर एरिक और अयाज ने महिपाल को समझाया कि गुरजीत से दूर रहे। तो महिपाल ने कहा "गुरजीत तुम तीनों को पसंद नहीं करता इसलिए तुम उससे जलते हो। वह अमीर भी है और मुझे सच्चा दोस्त भी मानता है।"

तब एरिक ने कहा - "उसकी अमीरी से हमे क्या लेना-देना? और तुम भी जानते हो कि तेजिंदर और अयाज के पिता कितने धनवान हैं।इनकी खुद की कंपनियां हैं, गुरजीत के पिता तो कंपनी के मैनेजर मात्र हैं। हमें उसकी आदतें अच्छी नहीं लगतीं। "

" ऐसा न हो कि किसी दिन उसकी संगत में तुम किसी परेशानी में आ जाओ। " अयाज ने कहा।

महिपाल चुप रहा लेकिन धीरे धीरे उसने उन तीनों से ही दूरी बना ली। और गुरजीत के साथ ही ज्यादा समय बिताने लगा।

सारे बच्चे महिपाल को भी कभी सामने तो कभी पीठ पीछे पिछलग्गू कहने लगे। पर वह इन बातों पर कोई ध्यान न देता। गुरजीत भी कभी लालच देकर तो कभी दोस्ती का वास्ता देकर उससे अपना मनचाहा करा लेता। धीरे-धीरे महिपाल भी अनेक बुरी आदतों का शिकार हो गया।

एक दिन इंटरवल की समाप्ति के कुछ सैकेंड पहिले जब सब बच्चे अपनी कक्षाओं में जा रहे थे। गुरजीत महिपाल को लगभग खींचते हुये टायलेट की ओर ले गया। दूसरी ओर से एरिक और अयाज लौट रहे थे। उन्हे कुछ संदेह हुआ तो

वह वही खंभे की ओट में खड़े हो गए।आज तेजिंदर किसी कारण से स्कूल नहीं आया था। उन्होंने देखा कि गुरजीत वाॅशरूम के बाहर दरवाजे से सटकर खड़ा हो गया। वाॅशरूम से चौथी कक्षा का समीर जैसे ही बाहर आया गुरजीत ने पीछे से उसकी आँखें बंद की और उसे वाॅशरूम में बंद कर बाहर से सिटकनी लगा दी। बेचारा समीर देख ही नहीं पाया कि उसके साथ यह हरकत किसने की है।

एरिक और अयाज भी जब तक कुछ समझते गुरजीत महिपाल का हाथ पकड़ कर अपनी कक्षा की ओर तेजी से बढ़ गया था। उसकी इस हरकत से अब महिपाल डर गया। गुरजीत ने महिपाल को धमकाया - "अगर किसी से कुछ भी कहा तो तेरे अब तक के सभी गलत कामों का चिठ्ठा फोटो सहित तेरे मम्मी पापा को बता दूँगा।

उधर अयाज ने एरिक से वहीं रुकने को कहा और दौड़कर प्रिंसिपल को सारी बात बता दी।

प्रिंसिपल और कुछ टीचर दौड़े-दौड़े आये और समीर को बाहर निकाल अपने चैम्बर में लेकर आये। समीर बहुत घबरा गया था और अभी भी रो रहा था। प्रिंसिपल ने खुद उसे पानी पिलाया और ढाढस बंधाया। फिर जानना चाहा कि किसने उसके साथ ऐसा दुस्साहस किया? समीर ने चेहरा देख ही नहीं पाया था, बेचारा क्या कहता।

अयाज और एरिक की बात का सच जानने के लिए उन्होंने गुरजीत और महिपाल को बुलाया। गुरजीत पहिले तो इंकार कर गया और उल्टा अयाज और एरिक को ही दोषी ठहराने लगा। फिर अपने पापा के पद की धौंस दिखाने लगा। पर कहीं से भी बचने की संभावना नहीं दिखी तो उसने पूरा दोष महिपाल के सिर मढ़ दिया। बोला - "मैं तो पहिले ही आ गया था। यह महिपाल वहीं रुक गया था।"

महिपाल भी अपने बचाव में तर्क देने लगा।

असली दोषी कौन है, तय करना मुश्किल हो रहा था।

अचानक समीर को कुछ याद आया। उसने कहा - "सर, मुझे जिसने भी वाॅशरूम में बंद किया था, उसके दाहिने हाथ पर मेरे नाखून से खरोंच के निशान होंगे। "

प्रिंसिपल सर ने उत्सुकता से जानना चाहा तो समीर ने कहा - "मेरी माँ ने मुझे सिखाया था कि ऐसी किसी भी परिस्थिति में हल्की खरोंच या किसी तरह की पहिचान अपराधी के शरीर पर बनाने की कोशिश करना चाहिए। "

प्रिंसिपल ने चारों की हथेलियाँ पलट कर देखीं तो गुरजीत के हाथों पर खरोंच के स्पष्ट निशान दिख रहे थे।

माँ से मिली सीख से, समीर ने अपराधी की पहिचान करा दी।

गुरजीत को विद्यालय से निकाल दिया गया। महिपाल अकेला रह गया। घर पर भी बहुत डाँट मिली थी। शर्म के मारे उसने स्कूल आना भी बंद कर दिया।

एक दिन तेजिन्दर, एरिक और अयाज तीनों ही महिपाल के घर गये और उसे अपने साथ खुशी खुशी स्कूल लेकर आये। प्रिंसिपल सर को विश्वास दिलाया कि अब कभी भी ऐसा नहीं होगा।

TEAM फिर बन गयी थी। चारों फिर साथ-साथ कक्षा में बैठने लगे।

राजेन्द्र श्रीवास्तव

बाल कविता

छोटा सा ये दिल मेरा है

राजश्री तिवारी पांडे

छोटा सा ये दिल मेरा है ,
छोटे छोटे सपने हैं ।
आसमान है *सरहद* मेरी ,
चांद सितारे अपने हैं ।

मिट्टी की गुड़िया भी मेरी,
बरगद की लट मेरी है ।
पीहू पपिहा,तोता,मैना ,
सुख दुख चितपट मेरी है ।

बहती नदिया ताल तलैया,
सबसे मेरी यारी है ।
जग सारा ये घर है मेरा,
मम्मी सबसे प्यारी है ।

छीनो मत बचपन तुम मेरा,
बच्चा मुझ को रहने दो ।
बचपन की हद को पहचानो,
सच्चा मुझको रहने दो ।

राजश्री तिवारी पांडे

बाल कविता

परिवार

सुहानी रूसिया (नन्ही कलम)

मैं हूँ प्यारी प्यारी सबसे
सबकी राजदुलारी हूँ
न्यारी न्यारी सुन्दर सुन्दर
सब कुछ है मेरा अपना

मम्मी पापा मेरे प्यारे हैं
बहन मेरी प्यारी प्यारी
सब सुख से रहते है
सबके साथ मिल जुलकर

मम्मी अच्छी मम्मी सच्ची
यही सिखलाती मेरी माँ
क्या है सही क्या है गलत,
मिलजुल रहना सब

पापा है मेरे प्यारे प्यारे
मानते हैं जो मै कहती सब
सबकुछ यही दिलाते है
मम्मी से भी बचाते है

बहन मेरी प्यारी प्यारी है
पर सताती मुझे बहुत
सभी करते प्यार हैं मुझसे,
यही परिवार है मेरा छोटा सा

सुहानी रूसिया

आलेख

वर्तमान परिदृश्य में वैवाहिक संबंधों की बुनियाद

सुधा शर्मा

भारतीय संस्कृति में विवाह एक सामाजिक व्यवस्था के साथ-साथ धार्मिक मान्यताओं से भी ओत प्रोत है।

जैसे जैसे सभ्यता का विकास होता गया विवाह के तौर-तरीकों में परिवर्तन होता गया ।

वर्तमान समय में आज विवाह के अनेक रूपा तरण दृष्टिगोचर होते हैं

समय काल के साथ सामाजिक संस्कार और व्यवस्था चरमरा उठी है

वर्तमान परिदृश्य में आधुनिकता से उपजी नवीन मानसिकता ने नवल पीढ़ी को आत्मकेन्द्रित कर दिशा भटकन के चौराहे पर ला खड़ा कर दिया है जहाँ हताशा कुंठा और अवसाद व कलह की तेज झंझावातों से नित वैवाहिक संबंधों की बुनियाद डगमगाती नजर आती है ।

सात फेरों का बंधन सात जनमों का नाता कहलाने वाले इस रिश्ते में बुनावट के धागे कहाँ कमजोर है आइए जरा गौर करें ।

1-महत्वकांक्षा

उच्च महत्वकांक्षी युवा पारिवारिक दबाव के कारण शादी कर तो लेते हैं पर अतृप्त इच्छाएं शादी के पश्चात सर उठाती है और आपसी टकराव का कारण बन जाती है ।जिसमें दहेज भी एक प्रमुख लालसा है ।

2-अधिक उम्र में शादी

कैरियर या अन्याय कारणों से विवाह में देरी युवाओं की कोमल सपनों पर आघात होते हैं मनचाहा जीवनसाथी

नहीं मिलने पर भी समझौता करते हैं ।

3-पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण

पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण करते अधिकांश युवा विवाह से पहले ही पति-पत्नी का संबध जीते हैं ऐसे में वह आकर्षण और प्यार विश्वास नहीं हो पाता जो नवयुगल में होना

चाहिए, महज एक समझौता या बासी रिश्ते को निभाने को मजबूर होते हैं ।

4-अहं का टकराव

नौकरी पेशा दम्पत्तियों में कभी कभी अहं का बहुत ज्यादा टकराव भी होता है एक दूसरे से अधिक अपेक्षा और समय की कमी तनाव का कारण बन जाती है ।

5-एकल परिवार

आज पारिवारिक विघटन के दौर में एकल परिवार के चलते आपसी टकराव में कोई सामंजस्य कराने वाला तीसरा नहीं होता है परिणाम स्वरुप बहुत से मामलोंमें कटूता बढ़ती जाती है ।

6-नशा

नशा हर कलह का कारण है इसके प्रभाव मे ब्यक्ति चाहे किसी भी वर्ग का हो मानसिक स्तर से निम्न होकर घर परिवार में कलह का कारण बनता है ।

7-अवैध संबंध

विवाहेतर संबंध कभी भी किसी के लिए सही नहीं होता आज नैतिकता को गर्त में ढकेल अवैध संबंधों की बाढ़ सी आई है जिसके कारण पारिवारिक कलह टूटन अवसाद और हत्या तक परिणति हो जाती है।
इसके अलावा और भी सामयिक वजहों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता ।
प्यार विश्वास की बुनियाद पर रखी दो संस्कारो का यह पावन रिश्ता विवेक आपसी सामंजस्य एक दूसरे की मनोभावों का आदर करते हुए जीवन पथ पर
मुस्कराहट बनाए रखता है ।
संपूर्ण कोई नहीं होता
एक दूसरे की कमी को स्वीकारना ही पथ सीढ़ी है ।
कुछ नोक झोंक तो होनी ही चाहिए है ना??

सुधा शर्मा राजिम

आलेख

मेरा भारत महान

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

दुनिया का सर्वश्रेष्ठ देश भारत और यहाँ के निवासी महासर्वश्रेष्ठ | यहाँ की मान्यता है कि ईश्वर जब भी अवतार (जन्म) लेता है तो वो भारत में ही लेता है क्योंकि यहाँ की भूमि पावन - पवित्र है | यहाँ सबसे अधिक भगवान पाये जाते हैं और सभी बड़े शक्तिशाली होते हैं | इनके भक्त आये दिन आपस में लड़ - लड़ कर कट - मर जाते हैं पर इनके भगवान कभी इन्हें बचाने - समझाने या बीच - बचाव भी कराने नहीं आते | आश्चर्य की बात तो यह है कि यहाँ हर रोज एक - दो नये भगवान पैदा हो जाते हैं | यहाँ भगवानों का निवास रेलवेस्टेशनों पर और पटरियों के बीच में भी पाया जाता है | भारतीय भगवान लखपती नहीं, करोड़पति नहीं, अरबपति नहीं खरबपति और इससे भी ज्यादा अमीर हैं | लेकिन आप विश्वास कीजिये कि यहाँ गरीबी भी इतनी ज्यादा है कि लोगों को कूड़े के ढेरों में कुत्ता - बिल्ली, शुअरों के साथ खाते हुए देखा जा सकता है | अब कुछ अंग्रेज वंशज मुझपर भौंकेगे कि हमने तो कभी नहीं देखा | मैं उनसे कहना चाहूंगा कि पहले वो अपनी आंखों पर से अमीरी के घमण्ड वाला चश्मा उतारें फिर सबकुछ साफ - साफ दिखाई देगा | खैर यह सब छोडिये अब बाकी मुद्दों पर बात करते हैं | भ्रष्टाचार कोई बुरा शब्द नहीं है | भारत में तो सारे के सारे भगवान ही भ्रष्टाचारी हैं फिर यहाँ के खूंसट नेताओं, अधिकारीयों की बात ही करना बेकार है | अब देखिये यहाॅ ऐसा कोई मठ - मंदिर, मस्जिद, चर्च या गूरूद्वारा नहीं जहाँ चढ़ावा - बढ़ावा न होता हो | यहाँ लोगों में होढ़ मची रहती है कि वह सबसे ज्यादा चढ़ायेगा ताकि उसकी मनोकामना पहले पूरी हो जाये | कुलमिलाकर भगवान भी भ्रष्टाचारी हैं फिर दल्लों की तो बात ही करना बेकार है | अब कुछ लोग दलील देंगे कि भगवान कभी किसी से कुछ नहीं मांगते | मेरा जवाब - भईया सीधे - सीधे तो यहाँ के मंत्री - संत्री, अधिकारी भी कुछ नहीं मांगते | देखिये पिछले दिनों मैंने एक इण्टरव्यू दिया, मैं इंटरव्यू में पास भी हो गया, किसी ने मुझसे इशारों - इशारों में चालीस हजार का चढ़ावा चढाने को कहा मैंने कोई

ध्यान नहीं दिया | सूची लगी पर मेरा नाम नहीं था, कारण... चढ़ावा न चढ़ाना ही रहा होगा | इसके अलावा भारत महान की और भी बहुत बड़ी - बड़ी उपलब्धियां हैं | यहॉ की सरकारों के पास बजट नहीं है, खासकर किसानों और मजदूरों के लिए | यहाँ गरीब बच्चे भात - भात, रोटी - रोटी कहते हुए दम तोड़ देते हैं पर अगर यहाँ कोई विदेशी फिरंगी सरकारी मेहमान बनकर आ जाये तो यहाँ के बेशर्म मंत्री - संत्री बेशर्मी की सारी हदें पार कर देते हैं | तब इनकी शॉनो - शौकत देखने लायक होती है | ऐसा लगता है कि भारत ही दुनिया का एक मात्र अमीर सुविधा - सम्पन्न देश है | चलते - चलते अब बस इतना ही कहूंगा - मेरा भारत महान !

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

संस्मरण

'वादी से रिसता प्रेम का कहवा'

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

जब भी प्रेम के गीतों का बखान होगा, ज़ाफरान की तासीर का तरन्नुम बनेगा, कश्यप की धरती का गुणगान होगा, शंकराचार्य की जुबानी कही जाएगी, लालचौक से क्रांतिसूत्र माँगा जायेगा, डल झील से टपकते पानी की बात होगी, शिकारों और तैरनेवाले घर (हॉउस बोट) की सर्द रातों को याद किया जायेगा, चश्मे शाही में पत्थरों से रिसते पानी की चाह होगी, मुग़ल गार्डन को जेहन में उतारा जायेगा, विश्वविद्धयालय से शिक्षा की अजान होगी, फूलों के महकने को जब जीवन में उतरता देखा जायेगा, तब बेशक वादी की बर्फ से लेकर कहवे की महक का जायका लेकर कश्मीर की क्यारियों को ही याद किया जायेगा |

हाँ ! मैं अब तक उसी कहवे के स्वाद में खोया हूँ जिसने अनजान से शहर श्रीनगर में नए रिश्तों को बना कर मुझे तन्हा नहीं होने दिया | और हाँ सबसे खास बात कभी न भूल पाने वाले पलों में एक वादी का वो प्यार भी हैं जो मुझे हमेशा कश्मीर की तरफ खीचने के लिए काफ़ी हैं |

बहुत कुछ सुना था, इंदौर से दिल्ली तक की यात्रा में कश्मीर के बारे में, पेशे से पत्रकार होने के कारण बहुत कुछ लिखा हुआ ही पढ़ पाया था घाटी के सौन्दर्य के बारे में और हालातों का वही रोजमर्रा वाला हालचाल जो सियासत दुनिया को दिखाना चाहती हैं| पर दिल्ली से श्रीनगर की महज १ घंटा २५ मिनिट की उड़ान के बाद जो आँखों से कश्मीर को देखा और जाना वो कही अलग था | कमोबेश मैं विश्वास ही नहीं कर पा रहा था कि क्या मैं वाकई कश्मीर में ही उतरा हूँ या फिर कहीं और ...| क्योंकि कश्मीर के बारे में जो सुना या पढ़ा वो सब कोरी हवा हवाई ही थी | क्योंकि वादी के निश्चल प्रेम और मिठास के साथ अपनेपन के भाव को कोई शायद नहीं लिख पाया हो |

बहरहाल वादी में सिमटी हुई जाफरान की खुशबू अभी भी हिंदुस्तान के दिल तक नहीं पहुँच पाई इसका मलाल हैं मुझे और उन तमाम बुद्धिजीवियों से अपेक्षाएं भी है कि कम से कम वादी को लगी सियासी नज़र का टोटका भी करवा दो ताकि गुलजार हो जाये केशर की क्यारियां |

श्रीनगर का टीआरसी (टूरिस्ट रिसेप्शन सेंटर) जहाँ जम्मू जाने वाली टेक्सियों का अम्बार-सा लगा हुआ रहता हैं फिर चाहे समय रात की

बारह क्यों ना हो, वही हमारा रुकना हुआ जहाँ से बमुश्किल २०० कदम पर डल गेट है| हम में शामिल हैं मेरा मातृभाषा परिवार जिनमे मेरे साथी अजय जैन 'विकल्प' जी और डॉ प्रीति सुराना जी |

हाँ ! मैं से हम हो जाना ही जिंदगी का असली मजा हैं | वादी की वो ठण्डी शाम जो सूरज को विदा करके चांदनी के घर में हमें खींच लाती हैं जहाँ सर्दी से बचने के लिए एक इलेक्ट्रिक कम्बल बिस्तर पर हमारा इंतजार कर रहा होता है और कमरे में लगा रूम हीटर हमें मुहं चिढा रहा होता हैं| इन्ही सब के बीच तापमान का अचानक से डिग्री ३ हो जाना भी बहुत याद आता हैं | खैर, शाम हुई हमें शाकाहारी भोजन को ढूंढने की जहमत नहीं उठानी पड़ी क्योंकि मेजबान हर दिल अज़ीज जिनसे पहली मुलाक़ात करने के बाद से ही अपनापन लगने लगा, हाँ नसरीन अली जी ने हमें पहले ही सारे ठिकानों की जानकारी दे दी थी जहाँ शाकाहारी भोजन मिलता हैं | डल गेट जाने के लिए हमने टेक्सी वाले को रोका और इन्दौरी आदतन हमने भाड़े को लेकर थोड़ा-सा मोल-भाव करना चाहा किन्तु उस बुजुर्ग टेक्सी ड्रायवर दद्दू की एक बात दिल के इतने गहरे उतर गई कि उसके बाद हम निशब्द ही हो गए | हाँ उन्होंने कहा कि 'आप तो मेहमान हैं और मैं आपसे वही दाम लूँगा जो आप दिल से देना चाहेंगे | क्योंकि मेहमान का दिल तोड़ने की कश्मीरी रवायत नहीं ....

इन्ही सब जद्दोहद के बाद रात का तीसरा प्रहर आ जाना जहाँ निंदिया रानी का दुबक कर कहना कि सो जाओ वरना सुबह टैगौर हाल में होने वाले आयोजन के लिए समय से नहीं पहुँच पाओगे | दिमाग अभी भी वही कसरत कर रहा था कि आखिर विमानतल से टीआरसी तक पहुंचने वाले पूरे रास्ते को हिन्दुस्तानी फ़ौज ने क्यों घेरे रखा है ? क्या वाकई कश्मीर को जरुरत है इन फौजी लामबंदी की ?

कश्मीर पर सियासत की इतनी गहरी सोच है कि जिसे बर्फ के मानिंद पिघलने की उम्मीद भी करना स्वयं को निश्छल पागलपन में डूबाना होगा |

खैर, सर्द रात ने ख्यालों की कम्बल ओढ़ा कर नींद की आगोश में ले ही लिया और फिर हम सीधे १० बजे सो कर उठे जबकि ११ बजे हमें टैगौर हाल पहुंचना था जहाँ हमारी हिन्दी माँ अपनी बहन उर्दू के घर हमारा इंतजार कर रही थी | बहन के बच्चों का सम्मान जो होना था | हम थोड़ा विलम्ब से पहुंचे लगभग आधा घंटा|

और इसी बीच मेरे अजीज मित्र या कहूँ भाई जिनसे मैं खुद भी पहली दफा मिला बस सोशल मीडिया के सहारे ही तीन सालों से सम्बन्ध और संवाद बना हुआ था, शाह ऐजाज भाई आ गए .... भाई ने कहा कि आप हमारी एक्टिवा पर चलिए हम आपको कश्मीर दिखाते हैं | और मैं तो चल दिया एक्टिवा पर और मेरे साथी सब टेक्सी से पहुंचे टैगौर हाल |

टैगौर हाल में तमाम कश्मीरी फरिश्तों के बीच ही बैठी थी हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. जोहरा अफजल जी और ख्यात लेखक निदा नवाज जी भी| **घाटी में हिन्दी के विकास व विस्तार के लिए कार्यरत संस्था 'वादीज़ हिंदी शिक्षा समिति' ने 'मातृभाषा उन्नयन संस्थान' (पंजी.) इंदौर व 'आकाशवाणी केंद्र श्रीनगर' के साथ मिलकर बुधवार को टैगोर हॉल में हिंदी भाषा सारथियों के सम्मान एवं हस्ताक्षर बदलो अभियान की शुरुआत की थी।** बच्चों ने कश्मीरी गीतों पर थिरकते अरमानों के साथ हमारा भी स्वागत किया जिससे है कश्मीर की महक आ रही थी | हाँ वही 'बुमरो -बुमरो' |

सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ यह आयोजन प्रारंभ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि कश्मीर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रो. ज़ोहरा अफज़ल, रेडियो कश्मीर श्रीनगर के कार्यक्रम प्रमुख सईद हूमायूँ कौसर (स्वागताध्यक्ष) एवं डॉ. निदा नवाज़ (राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित हिन्दी साहित्यकार) विशिष्ट अतिथि रहे। भारतीय जीवन बीमा निगम, जम्मू और काश्मीर बैंक एवं जम्मू कश्मीर पर्यटन विभाग ने इस कार्यक्रम की प्रस्तुति में सहयोग किया। शुरुआत में वादीज़ हिंदी शिक्षा समिति के निदेशक डॉ.अब्दुल अहद बंदरुं ने सभी अतिथियों का स्वागत-सम्मान किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों व आवाम में हिंदी में हस्ताक्षर करने की भावना को जागृत करना, साथ ही साथ उन लेखकों, कवियों एवं विश्वविद्यालयों के शोधार्थियों के मनोबल को बढ़ाना था, जो हिंदी भाषा से जुड़े हैं और हिंदी साहित्य को लेकर अपने उज्जवल भविष्य के सपने देख रहे हैं।

इस मौके पर मातृभाषा उन्नयन संस्थान से मैंने हिन्दी की उपयोगिता और उसके कारण ही संस्कृति संरक्षण के महत्व को बताया। साथ ही हिंदी में हस्ताक्षर क्यों हो,इसकी उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला | संस्थान के महासचिव अजय जैन 'विकल्प' ने मातृभाषा.कॉम की शुरुआत से अब तक के प्रकल्प पर विस्तार से चर्चा की। साथ ही संस्थान की उपाध्यक्ष डॉ.प्रीति सुराना ने विद्यालय स्तर से ही बच्चों को हिन्दी से जोड़ने और प्रेरणा को समझाया। कार्यक्रम में स्थानीय मीडिया सहित कई विद्यालयों के छात्र-छात्राएं, लेखक, शायर आदि शामिल हुए। शानदार संचालन की जिम्मेदारी अशफाक लोन जी ने निभाई। कार्यक्रम में

वादीज़ हिंदी शिक्षा समिति की अध्यक्षा नसरीन अली ने सबका आभार व्यक्त किया । और हम सब पहुँच गए 'कहवा' पीने | वही कहवा जो अब तक कश्मीरी प्रेम के रूप में हमारे जेहन में जिन्दा हैं | प्रेम से कश्मीर का ताल्लुक तो बहुत ही गहरा हैं इस बात को हमने भी मान लिया क्योंकि कश्मीरी संस्कृति जो मिठास बाँट रही थी उससे तो कभी नहीं लगता की यहाँ भी रक्तरंजित होली खेली गई हैं ?

इसके बाद हम चले डल होते हुए चश्मेशाही, जहाँ चिनार के पत्तों के अभूतपूर्व सौन्दर्य के बीच में पत्थरों से रिसता मीठा पानी भी आता हैं जिसके बारे में कश्मीर कहता हैं कि यह पानी नेहरु जी और इंदिरा जी को रोज पीना होता था जिसके लिए वे अपने निजी विमान से यहाँ का पानी पीने के लिए बुलवाते थे | इसके बाद हम पहुंचे मुग़ल गार्डन जहाँ वादी के सौन्दर्य की झलक डल में बनी देवदार की परछाई की तरह खुद को डूबने पर मजबूर कर रही थी | शाम ढलने लगी और हम वापस अपने ठिकाने की तरफ लौटने लगे जैसे पक्षी दिनभर की मशक्कत के बाद शाम होते ही घरोंदों की तरफ लौट आते हैं|

दिन का ढलना, मतलब कश्मीर में तापमान का गिरना ही होता हैं | यहाँ बस तापमान गिरता हैं इमान नहीं | इस बात को हमने महसूस किया फिर वही शाम को खरीददारी करने डल गेट पहुँचने पर...

सर्द रात और दिन की थकन अपना काम बखूबी कर रही थी जिसने हमें दुबक कर कम्बल में घुसने को मजबूर कर दिया | और नींद ने आगोश में लेने भी बड़ी फुर्ती दिखाई | जैसे-जैसे रात बढ़ने लगी मौसम और सर्द होता जा रहा था | हम तो सो गए क्योंकि सुबह फिर से नए सूरज के पास जाना था | और रेडियो कश्मीर भी | सुबह की थोड़ी-सी धूप ने जल्दी उठा दिया और हम तैयार हो कर निकल पड़े डलगेट की तरफ... क्योंकि हम रात में ज़ाफरान और अखरोट खरीदना भूल गए थे, हम कहवा भी खरीद लाये पर वो मिठास नहीं जो केवल कश्मीर में थी....|

फ़ौज की चेकिंग के बाद नसरीन जी के साथ आकाशवाणी के दफ्तर पहुंचे जहाँ हम हिन्दी पूतों का साक्षात्कार होना था, हुआ भी... और फिर हम तैयार हुए अपने मकां की तरफ लौटने को| इन्ही के बीच हमारे मेजबान की आँखों में थमी हुई बरसात का बूंदों के रूप में झलकना देख कर रुक-से गए|

खैर, जो आया है वो जायेगा ये नियति ने तय कर दिया हैं पर विरह की वेदना से उर भर तो जाता हैं| झलकती आँखों की नमी इस बात की गवाही दे रही थी कि हम जरुर अपने वतन की खुशबू को समेट कर ले जा रहे हैं| इन्ही सब के बाद पुन: विमानतल की और लौटना जहाँ से अगली यात्रा दिल्ली की थी, इसी के बीच फिर फ़ौज का वो खौफ़ जो कश्मीर के चेहरे पर साफ तौर पर देखा जा सकता था झलकने लगा | कश्मीर को आदत-सी हो गई है सियासती दर्द की, पर एक बात से फिर इनकार नहीं किया जा सकता कि कश्मीरी वैसे भी नहीं हैं जो हमें रोज पढ़ाए जाते हैं| कश्मीर के कुछ लोगो के कारण आवाम को क्यों सजा? खैर, इन सब के बीच हमारे विमान ने भी दिल्ली के लिए उड़ान भर ली और हम समेट लाये वादी से रिसता प्रेम का कहवा | पर यक़ीनन यह कहवा नसरीन जी द्वारा बनवाए गए कहवे जैसा तो नहीं है |

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
पत्रकार एवं स्तंभकार
+91-7067455455

रिपोतार्ज
"कश्मीर में हस्ताक्षर बदलों अभियान की शुरुआत, हिन्दी प्रेमी हुए एकजुट"

"हिन्दी के शोधार्थी, भाषासारथी, लेखक आदी प्रतिभाओं का हुआ सम्मान"

श्रीनगर | घाटी में हिन्दी के विकास व विस्तार के लिए कार्यरत संस्था “वादीज़ हिंदी शिक्षा समिति” (पंजी) श्रीनगर ने “मातृभाषा उन्नयन संस्थान” (पंजी) इंदौर व “आकाशवाणी केंद्र श्रीनगर” के साथ बुधवार को टैगोर हॉल में हिंदी भाषा सारथियों के सम्मान एवं हस्ताक्षर बदलों अभियान की शुरुआत की |

सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ आयोजन प्रारंभ हुआ जिसके मुख्य अतिथि कश्मीर विश्वविद्धालय के हिंदी विभाग की अध्यक्ष महोदया प्रो. ज़ोहरा अफज़ल , रेडियो कश्मीर श्रीनगर के कार्यक्रम प्रमुख श्री सईद हूमायूँ कौसर स्वागताध्यक्ष, एवं डॉ निदा नवाज़ (राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित सम्मानीत हिन्दी साहित्यकार)विशिष्ठ अतिथि रहें| भारतीय जीवन बीमा निगम, जम्मू और काश्मीर बैंक एवं जम्मू कश्मीर टूरिज़्म इस आयोजन के प्रस्तुतकर्ता थे | वादीज़ हिंदी शिक्षा समिति के निदेशक डॉ.अब्दुल अहद बंदरूँ जी द्वारा सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत सम्मान किया गया।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश बच्चों व आवाम में हिंदी में हस्ताक्षर करने की भावना को जागृत करना, साथ ही साथ उन नवजोत लेखकों, कवियों एवं विश्वविद्धालयों के शोधार्थियों के मनोबल को बढ़ाना था, जो हिंदी भाषा से जुड़े है और हिंदी साहित्य को लेकर अपने उज्जवल भविष्य के सपने देख रहे है|

कश्मीर घाटी के कई प्रसिद्ध कवियों, लेखकों,

प्रसारकों , शिक्षालयों को सम्मान “मातृभाषा उन्नयन परिषद” इंदौर ने दिया| इस मौके पर कई शिक्षालयों के बच्चों द्वारा कश्मीरी नृत्य एवं नाटिका जैसे अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत भी किये गये| दोनों समितियों के कार्यों की सराहना करते हुए प्रो.ज़ोहरा अफज़ल ने बताया कि कैसे आतंकवाद के दानव का असर कश्मीर में हिंदी पर हुआ है, कैसे 1990 के दशक में हिंदी विभाग बंद होने की कगार पर पहुँच गया था और फिर कैसे गुलजार हुआ और अभी भी हिंदी को आगे बढाने के लिए किस तरह के कदम उठाने चाहिये|

मातृभाषा से डॉ.अर्पण जैन 'अविचल' ने हिन्दी की उपयोगिता और उसके कारण ही संस्कृति संरक्षण के महत्व को बताया, साथ ही हस्ताक्षर क्यों हिन्दी में हो इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला| संस्थान के महसचिव अजय जैन 'विकल्प' ने मातृभाषा.कॉम के प्रकल्प पर विस्तार से चर्चा की | साथ ही संस्थान की उपाध्यक्ष डॉ प्रीति सुराना ने बच्चों को हिन्दी से जोड़ने और प्रेरणा को समझाया |

कार्यक्रम में स्थानीय मीडिया सहित कई विद्धालयों के छात्र-छात्राएं, लेखक, शायर आदी शामिल हुए | “वादीज़ हिंदी शिक्षा समिति” की अध्यक्षा नसरीन अली जी के आभार व्यक्त किया |

वादी में महकी हिन्दी की सुगंध, मातृभाषा.कॉम सम्मानित

जम्मू कश्मीर पर्यटन विभाग, जम्मू कश्मीर बैंक, भारतीय जीवन बीमा निगम व वादी'स हिन्दी शिक्षा समिति ने घाटी में हिन्दी के विस्तार व हस्ताक्षर बदलों अभियान हेतु मातृभाषा.कॉम परिवार को सम्मानित किया। श्रीनगर में आयोजित एक समारोह में मातृभाषा.कॉम परिवार के एवं खबर हलचल न्यूज़ के संपादक डॉ अर्पण जैन 'अविचल', अजय जैन 'विकल्प' और डॉ प्रीति समकित सुराना को शाल श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

इस सम्मान पर मातृभाषा.कॉम परिवार को इष्टजनों ने बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

सुश्री नसरीन अली प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त

कश्मीर घाटी सहित समूचे जम्मू-कश्मीर में हिन्दी भाषा को प्रचारित कर रही सुश्री नसरीन अली को मातृभाषा उन्नयन संस्थान की प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया जिसकी घोषणा मंच से संस्थान की उपाध्यक्ष डॉ. प्रीति समकित सुराना ने की |

पत्रकार : शाह ऐजाज़

अनुवाद

रचनाकार :- साबिर हक़ा (ईरान)

अनुवादक :- गीत चतुर्वेदी (भोपाल)

एक ईरानी कवि हैं साबिर हक़ा। मजदूर हैं। तेहरान में रहते हैं। चूंकि कविता से पेट नहीं भरता, सो पैसे कमाने के लिए ईंट-रोड़ा ढोना पड़ता है।

एक इंटरव्यू में साबिर कहते हैं, "मैं थका हुआ हूं. बेहद थका हुआ. मैं पैदा होने से पहले से ही थका हुआ हूं. मेरी *माँ* मुझे अपने गर्भ में पालते हुए मज़दूरी करती थी, मैं तब से ही एक मज़दूर हूं. मैं अपनी *माँ* की थकान महसूस कर सकता हूं. उसकी थकान अब भी मेरे जिस्म में है."

साबिर बताते हैं कि तेहरान में उनके पास सोने की जगह नहीं और कई-कई रातें वह सड़क पर भटकते हुए गुज़ार देते हैं. इसी कारण पिछले बारह साल से उन्हें इतनी तसल्ली नहीं मिल पाई है कि वह अपने उपन्यास को पूरा कर सकें।

साबिर 1986 की पैदाइश हैं। अभी तक उनके दो कविता-संग्रह प्रकाशित हैं और ईरान श्रमिक कविता स्पर्धा में प्रथम पुरस्कार पा चुके हैं.

1-*दोस्ती*

मैं 'ईश्वर' का दोस्त नहीं हूं
इसका सिर्फ़ एक ही कारण है
जिसकी जड़ें बहुत पुराने अतीत में हैं :
जब छह लोगों का हमारा परिवार
एक तंग कमरे में रहता था
और (ईश्वर) के पास बहुत बड़ा मकान था
जिसमें वह अकेले ही रहता था

2- *बंदूक़*

अगर उन्होंने बंदूक़ का आविष्कार न किया होता
तो कितने लोग, दूर से ही,
मारे जाने से बच जाते.
कई सारी चीज़ें आसान हो जातीं.
उन्हें मज़दूरों की ताक़त का अहसास दिलाना भी
कहीं ज़्यादा आसान होता.

3-*घर*

मैं पूरी दुनिया के लिए कह सकता हूं यह शब्द
दुनिया के हर देश के लिए कह सकता हूं
मैं आसमान को भी कह सकता हूं
इस ब्रह्मांड की हरेक चीज़ को भी.

लेकिन तेहरान के इस बिना खिड़की वाले किराए के कमरे को
नहीं कह सकता,
मैं इसे घर नहीं कह सकता.

4- *आस्था*
मेरे पिता मज़दूर थे
आस्था से भरे हुए इंसान
जब भी वह नमाज़ पढ़ते थे
(अल्लाह) उनके हाथों को देख शर्मिंदा हो जाता था.

5-*ईश्वर*
ईश्वर भी एक मज़दूर है
ज़रूर वह वेल्डरों का भी वेल्डर होगा.
शाम की रोशनी में
उसकी आंखें अंगारों जैसी लाल होती हैं,
रात उसकी क़मीज़ पर
छेद ही छेद होते हैं.

शहतूत
क्या आपने कभी शहतूत देखा है,
जहां गिरता है, उतनी ज़मीन पर
उसके लाल रस का धब्बा पड़ जाता है.
गिरने से ज़्यादा पीड़ादायी कुछ नहीं.
मैंने कितने मज़दूरों को देखा है
इमारतों से गिरते हुए,
गिरकर शहतूत बन जाते हुए.

रचनाकार :- साबिर हक़ा (ईरान)
अनुवादक :- गीत चतुर्वेदी (भोपाल)

साक्षात्कार

रचनाकार एवम समीक्षक

ब्रजेश शर्मा 'विफल'

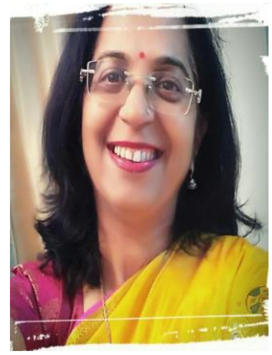

प्रस्तुतकर्ता

पिंकी परुथी 'अनामिका'

अंतरा शब्द शक्ति परिवार के मुखिया , कर्णधार, जो अपनी टिप्पणियों और उपनाम "विफल" की वजह से बहुत चर्चित रहते हैं। इनका सामान्य ज्ञान, व्याकरण ज्ञान, विधाओं का ज्ञान असीमित है। कई मंचों और संस्थाओं से जुड़े हुए इस साहित्यकार ने, भारतीय रेल की पटरियों पर दौड़ते दौड़ते बहुत सा ज्ञान बटोर लिया है। ये भारतीय रेल विभाग में उप मुख्य टिकिट निरीक्षक के पद पर कार्यरत हैं। आज मंच की ओर से इनका साक्षात्कार लेने का अवसर प्राप्त हुआ है। आइए जानते हैं, इनके जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं और दृष्टिकोण को, स्वागत है आपका आदरणीय

ब्रजेश कुमार शर्मा"विफल" जी का,....
पिंकी- नमस्ते ब्रजेश जी

ब्रजेश जी- नमस्ते पिंकी जी
और आपने इतना कुछ जो कह डाला, ये आपके स्नेहाधिक्य के अतिरिक्त कुछ नही,..

पिंकी- सबसे पहले पाठकों को संक्षिप्त परिचय से अवगत कराएं आदरणीय
ब्रजेश जी- जी हां बिल्कुल
1- पूरा नाम :- ब्रजेश शर्मा "विफल"
2- पिता का नाम:- स्व. श्री रविदत्त शर्मा
माँ :-श्रीमति क्रांति शर्मा
3- वर्तमान/स्थायी पता:- 1199/1
परी इंटरनेट प्लाजा के पास, ईसाई टोला
'दिलदार नगर -खाती बाबा झाँसी (उ.प्र.)
284003
4--फोन नं/वाटस एप नं/ ई मेल
:- 9451171389/
8395869358/braj.vifal4@gmail.com
5- शिक्षा/जन्म तिथि:- B.Sc,B.Ed,
M.A.(अँग्रेज़ी साहित्य)/
01.08.1965
6- व्यवसाय:- भारतीय रेल में उप मुख्य टिकिट निरीक्षक के पद पर कार्य रत
प्रकाशन :-
निजी तौर पर तो कुछ नही,
अलबत्ता

कुछ साँझा काव्य संकलन ,
" क़दमों के निशान",
सत्यम प्रभात,
काव्योदय 1 एवम् 2,
अनकहे जज़्बात,
हिंदी भाषा सहोदरी का सहोदरी सोपान 3,
ग़ज़ल एक जिज्ञासा,
उड़ान मंच का साँझा ग़ज़ल संग्रह
साँझा गज़ल संग्रह गुलज़ार
प्रकाशनाधीन:- 2 अनाम साँझा संग्रह
(सत्यम् प्रकाशन के तत्वावधान में),
अंतरा शब्द शक्ति के मेगा प्रोजेक्ट में दोहा
गज़ल गीत अतुकांत साँझा संग्रहो में ।
तथा समाचार पत्र और युग गरिमा,सृजन सरिता
,काव्य रंगोली सहित कई पत्रिकाओं में,
तथा प्रयास अंतर्राष्ट्रीय इ पत्रिका एवं अंतरा
शब्द शक्ति सहित राष्ट्रीय ई पत्रिकाओं में
प्रकाशन|

प्राप्त सम्मान :-
ग़ज़ल सागर झुंझनू द्वारा "साहित्यकार
सम्मान",
विश्व हिंदी रचनाकार मंच द्वारा "काव्यश्री"
सम्मान,
हिंदी सागर सम्मान,
प्रतिमा रक्षा सम्मान समिति करनाल द्वारा ग्रेट
अचीवर्स अवार्ड,
साहित्य सागर द्वारा युग सुरभि सम्मान,
काव्य रंगोली साहित्यिक पत्रिका द्वारा:-
काव्य रंगोली साहित्य भूषण सम्मान 2017,
बुन्देली साहित्य एवम् सांस्कृतिक परिषद डबरा
द्वारा :-श्री रामसेवक सम्मान
दो चार और भी जुट जाते मग़र सरकार ने
छुट्टी ही न दी,.
साथ ही साथ कई ऑनलाइन सम्मान भी ।।
संस्थाओं से भी सम्बद्धता :-
राष्ट्रीय कवि संगम,
जिज्ञासा काव्य मंच,अंतरा शब्द
शक्ति,काव्योदय, उड़ान तथा सोपान,अनकहे
शब्द एवम् अंतर्जाल पर कई ऑनलाइन
संस्थाओं से वाबस्तगी है ।
पिंकी- साहित्य में रुचि कब से है?
ब्रजेश जी - साहित्य में रूचि तो बचपन से
ही है ।
बाल पत्रिकाओं को पढ़ते 2,
राजन इक़बाल बाल उपन्यास से सामाजिक और
जासूसी उपन्यासों से होकर पठन और
साहित्यिक अभिरुचि तक, एक लम्बा सिलसिला
रहा जो आज भी जारी है ।
फिर बी एस सी तक आते 2 कुछ तुकबन्दी शुरू
कर दी थी ।

पिंकी- आप नौकरी और साहित्य में रुचि,
दोनों में तालमेल कैसे बना पाते हैं?
ब्रजेश जी- दरअसल अपने शौक़ को यदि हम
जूनून की हद तक ले जाएँ,तो फिर कहीं कोई
बाधा नही आती ।
पठन मेरा इसी श्रेणी का शौक़ है ।।
और लेखन की कहूँ तो इसमें कोई सातत्य तो
है नही,
बस जब भी वक़्त मिले और भाव उभर आयें,

कुछ उल्टा सीधा लिख लेता हूँ

पिंकी - आपको लेखन की प्रेरणा कहां से मिली?
ब्रजेश जी- आस पास जो घट रहा है,सामाजिक विसंगतियां और मेरा अपना जीवन उद्देश्य कि मन, वचन, और कर्म से किसी को तकलीफ़ मत दो ।तो आप ईश्वर की good book में हैं ।
और यकीनन प्रेम भी सृजन कर्म की उत्प्रेरणाओं का मूल है, जो शनैः 2 व्यक्तिगत से समष्टिगत की और उन्मुख है ।

पिंकी- क्या आपके घर में साहित्य के क्षेत्र में किसी और का भी रुझान था?
ब्रजेश जी- लेखन की कोई पारिवारिक पृष्ठभूमि तो नही । मग़र मेरे दादाजी और नानाजी दोनों ही स्वतन्त्रता सेनानी थे । दादाजी दयानन्द सरस्वती जी के घोर अनुयायी थे । और चलता फिरता इन्सायक्लोपीडिया, उनके पास मेरी हर बाल सुलभ जिज्ञासा का समाधान था । नानाजी हिंदी ,उर्दू ,अँग्रेज़ी और गणित के प्रकांड विद्वान् थे ।उनकी निजी लायब्रेरी ठसाठस भरी थी । मग़र उनका कोई लेखन शाया हुआ हो मुझे याद नही आता । मेरे बचपन की कल्पनाओं में इन्ही के दिए रंग हैं ।
पिंकी- आप अपने जीवन, कर्म क्षेत्र, कार्य क्षेत्र, और पारिवारिक, सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने में , क्या स्वयं से संतुष्ट हैं?
ब्रजेश जी- जी पिंकी जी मैं स्वयम् को एक सन्तुष्ट व्यक्ति के स्तर पर देखता हूँ । और मेरे इर्द गिर्द जब किसी को, मुझसे कोई शिकायत महसूस नही होती तो मेरी इस सन्तुष्टि पर एक स्वाभाविक मुहर लग जाती है । मेरा नैचर ऑफ़ जॉब, पब्लिक डीलिंग और सीधे सम्पर्क का है ।
मन और तन दोनों बेहद थक जाते हैं, सब जूनून और शौक़ का खेल है ,तो इन शग़ल के लिए वक़्त निकल ही आता है ।।
और श्रीमति जी ने पारिवारिक दायित्वों से छुटकारा दिला रखा है तो अपने जैसे आलसी जीव,शौक़ का भरण पोषण भी कर लेते हैं।

पिंकी- ईश्वर की सत्ता पर और कृपा पर कितना विश्वास करते हैं?
ब्रजेश जी- शत प्रतिशत कोई एक परम् सत्ता, कोई एक परम् सत्य या प्रकृति जिस हिसाब से सारी कायनात को चला रही है । उसमें अविश्वास का कोई कारण ही नही । उसकी कृपा के बिना तो एक पत्ता तक नही हिलता ।

पिंकी- आपके अंदर का लेखक,कवि मन, सामाजिक कुरीतियों, वातावरण से व्यथित होकर मेंलिखता है तो क्या आप समझते हैं कि आपका लिखा गया कुछ बदलाव लाने में सफल होगा?
ब्रजेश जी -जी पिंकी जी हर लेखन मौलिक तौर खुद को सन्तुष्टि के लिए ही होता है । जिसे हम स्वान्तः सुखाय कहते हैं । और जब सरोकार विस्तृत होते हैं तो उपर्युक्त सब परिस्थिति और परिवेश को स्पर्श करते हैं । मैं नही जानता कि बदलाव लाने में मेरे प्रयास

कहाँ तक सफ़ल होंगे? मग़र मैं खुश हूँ कि अपने आप को तो , लेखन के ज़रिये बदल पाया हूँ ।
पहले से ज्यादा स्नेहिल, विश्वसनीय और शांत पाता हूँ खुद को । मानवता और परिस्थितियों को समझने और सहन करने की समझ भी बढ़ी है । तो मेरा लेखन मुझे तो बदल ही रहा है और चाहिए भी क्या? यदि हम सब स्वयम् में थोड़ा 2 ही सकारात्मक बदलाव ला पायें, तो दुनिया कई गुणा बेहतर हो जायेगी ।

पिंकी- लेखन की कौन सी विधा आपको स यह सबसे प्रिय है?
ब्रजेश जी-यूँ तो सबमें थोड़ा 2 मुब्तिला हूँ । सनातन छंद मुक्तक दोहे गीत गज़ल हाइकु लघुकथा आदि। मग़र मुझे गीत और गज़ल बेहद पसन्द हैं ।

पिंकी- आपको कोई ऐसी घटना याद हो जो यात्रा के दौरान हुई और आपको उसी समय लिखने को विवश कर दिया हो?
ब्रजेश जी- जी, पब्लिक डीलिंग में हूँ तो अच्छे और बुरे अनुभवों से रोज ही दो चार होता हूँ ।
कभी मन आहत ,तो कभी प्रसन्न होता है ।ज़िंदगी की किताब से तमाम प्रश्न, उभरते हैं । सर पर पोटली लादे, छोटे 2 बच्चों का हाथ थामे, इधर से उधर भागता मजदूर वर्ग ,भीतर ही भीतर कुछ चटक जाता है । तो वेदना शब्द भी पा जाती है ।
जब मैं कहता हूँ

एक दीप उन सब की ख़ातिर लौट के घर न आये जो,
चैन सुकूँ हमको देने को काल के गाल समाये जो.....

तो अनायास मेरी आँखों में कृष्णा का आँसुओं से भरा चेहरा उभरता है । जिसने कुछ दिन पहले ही अपने सैनिक पति को खोया है और ससुराल के अमानवीय व्यवहार से तँग आकर, सब कुछ छोड़कर अपने माता पिता के घर, बिना टिकिट जा रही है। खाने के लिए भी पैसे नही हैं। मन रुदन करता है, और आत्मा द्रोह । मग़र एक नपुंसक उबाल के अलावा कहीं कुछ भी करने में ख़ुद को असमर्थ पाता हूँ ।

पिंकी - कुछ और विशेष जो हमारे पाठकों से भी साँझा करना चाहें:-
ब्रजेश जी - सही मायनों में तो 26 अगस्त 65 को पैदा हुआ था । शायद गणना की सुविधा के लिए 1 अगस्त कर दिया गया । दौर भारत पाकिस्तान के युद्ध का था,, टोटल ब्लैक आउट
माँ बताती हैं अँधेरे में बहुत चीखता चिल्लाता था, तो मोमबत्ती के मद्धिम प्रकाश को भी रोकने के लिए भी खिड़की दरवाजों की रन्ध्र में अखबार ठूंस दिए जाते। बचपन अधिकतर ननिहाल में ही गुज़रा , नानी कच्ची गृहस्थी छोड़कर ही परलोक गमन कर गईं थी तो माँ ने ही छोटे भाई बहनों की देखभाल की । उम्र के इस दौर में आज सोचता हूँ कि पापा का त्याग कितना बड़ा था,,

जब मैं अपनी जरा सी सुविधा के मद्दे नज़र, अपनी पत्नि को कहीं जाने की सहज ही अनुमति नही दे पाता,, तब उन्होंने अपना सुख सहज ही त्याज्य किया । उनकी स्मृतियों को दिल से नमन और माँ तो माँ होती है, सन्तुलन त्याग और नेह की प्रति मूर्ति । 5 वीं की अर्धवार्षिक परीक्षा के बाद अकस्मात् पापा के पास ही शिफ्ट होने का प्रोग्राम बना ।। अपने प्रधानाचार्य के शब्द मुझे याद हैं , उन्होंने नानाजी से, स्कूल छोड़ते वक़्त कहा था कि शिक्षण सत्र पूर्ण करवा लेते पण्डितजी,, लड़का जनपद में नाम रोशन करेगा ।। मतलब लिखा पढ़ी में बाय बर्थ होशियार था,, ये बात आज आत्म कथ्य लिखते वक़्त समझ में आई मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश के शिक्षण पैटर्न अलग थे, सिलेबस भी अलग । 5 वीं की कक्षा में प्रवेश लेने के कुछ अरसे बाद ही अहसास हुआ कि 8वीं में पढ़ने वाली उस पड़ौसी कन्या के साथ कुछ इश्क़ मुहब्बत टाइप का कुछ हो गया है। शायद मालवा की माटी में ये कीटाणु सदैव से विद्यमान हैं, अन्यथा इश्क़ के उपकरण उत्तर प्रदेश के उस सुदूर ग्राम मोहम्मदपुर जिला मेरठ में कुछ कम न थे ।

पापा के ट्रांसफर होते रहे,. दोस्त बदलते रहे, ज़िंदगी में दस्तक देने वाले चेहरे भी ।

कुछ संदली खुशबुएँ आज तक जेहन में हैं। कालान्तर में जाकर ये राज़ खुला कि इकतरफा इश्क़ विनष्ट ही नही करते वरन विनिर्माण भी करते हैं ।

पिंकी - कोई विशेष शौक

ब्रजेश जी - बस लिखना पढ़ना और संगीत सुनना। जासूसी उपन्यासों के पठन से शुरू हुआ सिलसिला, श्रेष्ठतम साहित्य तक पहुँचा। उनदिनों रतलाम में बी एस सी करते वक़्त ,एक सोवियत साहित्य की दुकान हुआ करती थी। वहाँ से लेकर दोस्तोयेव्स्की, टॉलस्टॉय, गोर्की, फेदिन म।कारेंको, फ्योदोर को ख़ूब पढ़ा । गोर्की की आत्मकथा ने सिखाया विपरीत परिस्थितियां आपके सब्र का इम्तिहाँ लेने आती हैं । अन्ना केरेनिना को पढ़ना प्रेम की मूलभूत अवधारणाओं का बदल जाना था,..
गोर्की की *माँ* ने भीतर की समस्त चिढ,कुढ़न और अवसाद को तिरोहित कर सिखाया माँ प्रकृति की अद्भुत देन है।।
मुंशी प्रेमचन्द का हामिद आज भी आँखों के सम्मुख कन्धे पर चिमटा लिए खड़ा है।।
प्रसाद का छोटा जादूगर आज भी तिरस्कार की मुद्रा *न क्यूँ आता?* सनातन प्रश्न लिए सम्मुख है।
सनातन प्रेम के आख्यान का अनगढ़ प्रश्न *तेरी कुड़माई हो गयी??*
अपने अँधेरे उजालों के साथ मेरे संग है।।
शरद की तमाम नायिकाएं अपने सम्पूर्ण समर्पण की ताब लिए ज़ेहन में टँगी हैं ।।
महाप्राण निराला ,महादेवी वर्मा, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ,यशपाल, स्वामी विवेकानन्द , ओशो,विमल मित्र ,रांगेय राघव, टैगोर, वृंदावन लाल वर्मा सब मेरे जूनून से होकर गुज़रे हैं । चलती ट्रेन में पढ़ने से लेकर मानिकपुर के रेस्ट हाऊस का अकेलापन मेरे इस जूनून का गवाह है।

अपने बॉस ,माँ और सहधर्मिणी की घुड़कियाँ भी निर्लिप्त भाव से स्वीकार की हैं।
अंग्रेजी में भले ही हाथ तंग हो, मग़र मिल्टन , कीट्स ,वर्ड्सवर्थ, शैली, शेक्सपियर, डिकेन्स, इलियट आदि पर भी हाथ आजमाने का बेजा प्रयास किया है ।

पिंकी - आपको मंचों के अलावा भी भी क्या कहीं सुना जा सकता है?
ब्रजेश जी - जी फेसबुक और whatsapp के तमाम ग्रुप्स पर मेरी मधुरिम वाणी सुनी जा सकती है
और कुछ मित्रों ने यू ट्यूब पर भी कुछ अपलोड कर रखा है ।
तकनीक के मामले में अपना हाथ थोड़ा तँग है।
पिंकी- आज इंटरनेट के दौर में साहित्य के क्षेत्र में बदलाव को आप किस तरह देखते हैं?
ब्रजेश जी- पिंकी जी, इंटरनेट के इस दौर साहित्यकारों की बेतहाशा भीड़ बढ़ गयी है । कोई कुछ भी लिखता है और पोस्ट कर देता है । न शब्द हैं न भाव हैं न ही गहराई और न ही लेखन पर कोई श्रम । इंटरनेट ने व्याकरण के समीकरण और गणित बिगाड़ दिए हैं ।
लोगों की न हिंदी ही परिपक्व हुई और न ही अंग्रेजी ये तो हुई कमियाँ । और लोग बड़ी सरलता से, बिना अपराध बोध से ग्रस्त हुए, दूसरों की रचना पर अपना ठप्पा लगा कर परोस रहे हैं ।

भाई मनोज जैन मधुर जी के शब्द भी इस परिप्रेक्ष्य में, बेहद मौज़ूँ हैं ।

"इधर उधर के शब्द जोड़कर तुक्कड़ पंत हुआ।"

और यदि ख़ूबियों की बात करूँ तो इंटरनेट ने एक दूसरे को इतना क़रीब ला दिया कि साहित्य के कई बड़े नाम आज सहज ही उपलब्ध हैं । wap और फ़ेसबुक पर साहित्यिक ग्रुप्स की एक बड़ी श्रंखला है मसलन अंतरा शब्द शक्ति, जिज्ञासा, उड़ान, सोपान, आग़ाज़, कविता लोक , मुक्तक लोक, विश्व हिन्दी रचनाकार मंच, विश्व हिंदी संस्थान कनाडा, अनकहे शब्द,जो कार्यशाला का आयोजन करती हैं । शिल्प विधान से नवांकुरों को ज्ञान सम्पन्न करती हैं ।
और तमाम संस्थाएं साहित्य की अभिवृद्धि के लिए सतत प्रयत्न शील हैं । मतलब कुल मिलाकर एक मिला जुला प्रभाव हुआ है ।

पिंकी- आप इतनी सुन्दर गीत और ग़ज़ल लिखते हैं, भाभीजी की क्या प्रतिक्रिया होती है?
ब्रजेश जी - मेरी तमाम रचनाओं की वो पहली श्रोता हैं । और मुझे सुनकर खुश होती हैं । इस मामले में काफ़ी सौभाग्यशाली कह सकता हूँ स्वयम् को । उनका स्वप्न है कि एक उपन्यास लिखूँ, दिमाग में खिचड़ी पक भी रही है । मग़र फ़िलहाल बीरबल की खिचड़ी है।

पिंकी - तख्खलुस विफल रखने के पीछे कोई कारण कोई राज़?? आपको उपनाम सफल रखना चाहिए था ??
ब्रजेश जी - इश्क़ की नाकामियों से इसका कुछ लेना देना नही है । इश्क़ नामुकम्मल जरूर रहे,
पर नाकाम नही हमारी पढ़ाई का दौर वो दौर था जब माता पिता की चाहतों का सम्मान औलाद का कर्तव्य समझा जाता था ।
मेरे पापा मुझे इंजीनियर बनाना चाहते थे और मैं तमाम प्रयासों के बावजूद उनका ये ख़्वाब पूरा नही कर पाया । यही कारण कि वो सतत मेरी स्मृति में रहे,उपनाम विफल कर लिया । नाम तो बदल नही सकता था पहले ए.असफल की तर्ज़ पर नाम बी.असफल रखा ।बाद में परम् मित्र हफ़ीज़ ख़िल्जी की सलाह पर विफल कर लिया

पिंकी - आपके लिए लेखन का उद्देश्य क्या है?
ब्रजेश जी- यूँ तो लेखन का उद्देश्य स्वान्तः सुखाय ही है पर किसी को छू ले तो क्या बात है । कोई सकारात्मक बदलाव, सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदनाओं का प्रादुर्भाव मेरे लेखन का निहित अर्थ है ।

पिंकी- लेखन के प्रति विचार, यानि, क्या है लेखन आपके नज़रिये से?
ब्रजेश जी- लेखन भावाभिव्यक्ति की वो कला है जो लेखक को भीड़ से अलग करती है । सार्थक लेखन, जो सकारात्मक प्रवृत्तियों के द्वार खोलने में सहायक हो ।
और वही लेखन मुझे सफ़ल लेखन प्रतीत होता है जब पाठक और लेखक के मध्य एक तादात्म्य स्थापित हो । और पाठक को रचना आप बीती सी लगे ।।

पिंकी- आपके आने वाले प्रकाशनों से सम्बन्धित जानकारी दे सकते हैं क्या?
ब्रजेश जी - अंतरा शब्द शक्ति के विशाल आयोजन का हिस्सा हूँ , जो तमाम अलग विधाओं पर साँझा संकलनों का अति शीघ्र प्रकाशन करने जा रही है ।
इसके अलावा एक सोलो गीत और गज़ल के प्रकाशन के लिए भी श्रम रत हूँ । एक उपन्यास का विचार भी ज़ेहन में है ।
देखें कब फलीभूत होता है ।।

पिंकी - पाठकों के लिए कोई सन्देश:-
ब्रजेश जी - प्रकृति ने सिर्फ इंसान को सोचने ,समझने और भावाभिव्यक्ति की क्षमता दी है । भावों का समुचित और सटीक , संगुम्फन ही एक सृजनकार के मूल में होता है । मैं सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि पढ़ें, पढ़ें और ख़ूब पढ़ें , इससे भाव परिपुष्ट होते हैं । और सृजन को कच्ची मिटटी इसी पठन पाठन से मिलती है ।स्वयम् से बढ़कर कोई समालोचक नही होता,आपका बारम्बार स्वयं की रचनाओं को पढ़ना, उनके गुण दोषों आपको अवगत करा देगा ।

सन्दर्भत: मुझे बेंजामिन फ्रेंकलिन का एक कथन याद आता है कि व्यक्ति को दुनिया की हर चीज के बारे में कुछ न कुछ जानना चाहिए और किसी एक चीज के बारे में सब कुछ । तो आपको साहित्य की हर विधा में चाहे आप गद्य में हों या पद्य में, थोड़ा दखल रखना चाहिए ।
और किसी एक विधा में सम्पूर्णता । फिर चाहे वो गीत,गज़ल, नवगीत, कविता,अतुकांत, नव कविता, सनातन छंद ,कहानी,संस्मरण, रिपोर्ताज़, तांका, हायकु, कहमुकरी, निबन्ध, दोहे, गीतिका, मुक्तक कुछ भी क्यूँ न हो ।।
और सबसे बड़ी बात दूसरों के लेखन के प्रति सम्मान आपका मैयार ही बढ़ाएगा ।

पिंकी- आप अपने समकक्ष या समकालीन किन किन रचनाकारों को सम्मान देते हैं और उनकी रचनाओं और कार्यशैली से प्रभावित हैं?
ब्रजेश जी- आभासी दुनिया के तमाम सच्चे मित्रों की लम्बी सूची है,जिनका लेखन और स्नेह मुझे सम्बल देता है और जिनके साथ मन के तार अनायास आ जुड़े हैं ।
गज़ल गुरु विजय स्वर्णकार, विशिष्ट प्रतिभा के धनी आ अनिल अनन्त जी, छंद गुरु शैलेन्द्र सोम, संजय उमंग,संजीव समर्थ,भाई जय गोविन्द शर्मा जी, अजय अर्पण जी
नवगीत के सशक्त हस्ताक्षर मनोज जैन मधुर, अतुकांत और बोधगम्य सृजन की धनी प्रीति समकित सुराना, दोहों के सरताज कुँवर उदय अनुज,आशा ओझा जी, बहुमुखी प्रतिभा के धनी आ भाई सत्य प्रसन्न जी, प्रदीप सोनी जी, भाई देवेन्द्र सोनी जी, हेमन्त बोर्डिया जी, गज़ल की दुनिया में चमकते सितारे दीपशिखा सागरजी, आ अरुण विज्ञ जी, राजेश प्रखर जी, पूनम प्रकाशजी,गुरुचरण मेहता रजत जी, विनोद मानस जी,कनुप्रिया जी,शालिनी श्रीवास्तव जी, कपिल मणि जी ,उदय मणि जी,कल्पना शर्मा जी, सरोज परिहार जी, किरण सिंह शिल्पी जी प्रसिद्ध उपन्यासकार डॉ राजलक्ष्मी शिवहरे, गद्य के प्रभावी सृजन कार भाई सन्तोष तिवारी जी,
लघुकथा के क्षेत्र में जाना माना नाम डॉ सुषमा गुप्ता,अपार संभावनाओं से भरे आ बीना शर्मा जी, पिंकी परुथी "अनामिका" जी आप स्वयं, अनुज प्रशांत रूद्र, श्रीमनचारी विराट,तेज सिंह तेज,अनमोल तिवारी, जीतेंद्र दिव्य,रोहिताश्व मिश्र, कुमार सत्यम्,आशीष ज़िद्दी ऐसे नाम जो बहुत आगे तक जायेंगे,
इन सबकी एक लम्बी सूची ।।

पिंकी- जी बहुत बहुत धन्यवाद आदरणीय ब्रजेश जी, आपने अपना बहुमूल्य समय दिया, जाते जाते अपनी सबसे प्रिय पंक्तियां गुनगुनाते जाइये
ब्रजेश जी- आपका भी बहुत बहुत धन्यवाद।
चलिये एक गीत देखें

छूट रहे हैं हौले हौले, मोह पगे धागे ।
आती जाती साँस इन दिनों, बैरागी लागे ।

टाँक रहा हूँ आज शून्य में,
मन कुछ के मोती,

धूप की नदिया के टूटे तट,
इक पीड़ा सोती,
नयन-नीर से आपूरित दृग,
श्वांस नही रोती,
कस्तूरी की खोज में जैसे,
मन का मृग भागे ,
आती जाती साँस इन दिनों, बैरागी लागे ...

रेत- ओस की बूँदों जैसे,
सारे स्वप्न हुए ,
विरह वेदनासे पूरित पथ,
कब निर्विघ्न हुए ?
व्यर्थ; स्वयम् को पा लेने के,
सारे यत्न हुए ,
अँधियारा पीछे चलता है,
रीतापन आगे,
आती जाती साँस इन दिनों, बैरागी लागे.....

निर्मितियों की पीर धरा पर,
जो भी है पाता,
मिलता है देवत्व उसी को,
वो सबको भाता ,
जग की ख़ातिर गरल पिये जो,
वो शिव हो जाता ,
हर पत्थर के भाग यहाँ पर,
बोलो कब जागे ?
आती जाती साँस इन दिनों,
बैरागी लागे ......

****

चार पंक्तियां और देखें, ये भी मेरी पसंद की हैं।

....

जहाँ में भीड़ रिश्तों की अकेला खुद को पाता हूँ,
नही होते हैं तारीकी में सँग साये दिखाता हूँ ,
लरज़ती उँगलियों में भी न जाने है शिफ़ा कैसी?
मेरी माँ मुस्कुरा दे तो मैं जन्नत भूल जाता हूँ ।।

ब्रजेश शर्मा 'विफल'

**************************""

पिंकी परुथी 'अनामिका'

पुस्तक समीक्षा

समीक्षित पुस्तक - "कस्तूरी की तलाश" (श्रृंखलित पद्य)

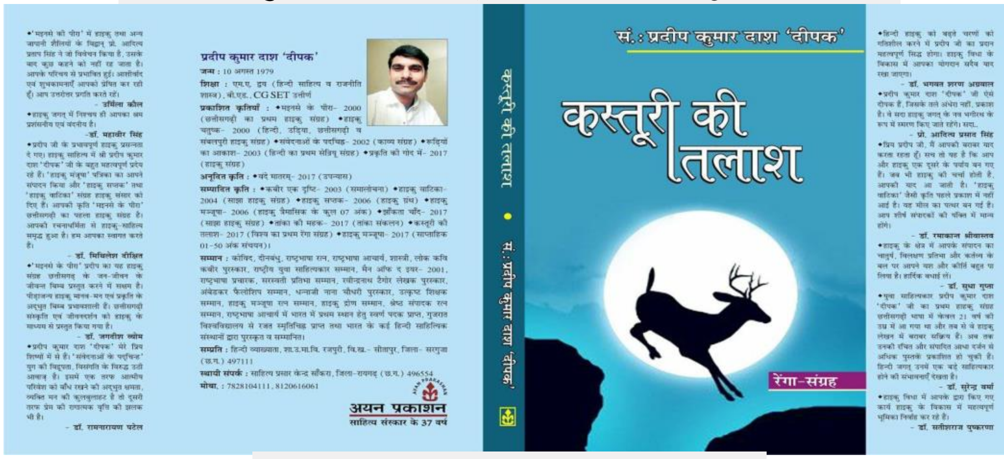

सम्पादक : प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष - 2017,

पृष्ठ 149 हिन्दी काव्य साहित्य को एक अनुपम उपहार - डॉ.सुरेन्द्र वर्मा

नए रास्तों की तलाश करने वाले श्री प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' हाइकु विधाओं की खोज में रेंगा काव्य से टकरा गए और जापान से उसे भारत हिन्दी साहित्य में ले आए । हिन्दी में उन्होंने अपने वाट्सअप व फेसबुक समूह के हाइकु कवियों से श्रृंखलाबद्ध रूप से ये कवितायें लिखवाईं और उन्हें संपादित कर हिन्दी काव्य को परोस दिया । नाम दिया "कस्तूरी की तलाश' । हिन्दी काव्य को उनका यह प्रयत्न एक अनुपम उपहार है । दीपक जी ने पुस्तक के अपने 'पुरोवाक्'...में जापान की काव्य विधा, 'रेंगा' का एक सुबोध परिचय कराया है । उसके विस्तार में जाने की ज़रूरत नहीं है । संक्षेप में बताते चलें कि रेंगा एक समवेत श्रृंखला बद्ध काव्य है । यह दो या दो से अधिक सहयोगी कवियों द्वारा रचित एक कविता है । रेंगा कविता में जिस प्रकार दो या दो से अधिक सहयोगी कवि होते हैं उसी तरह उसमें दो या दो से अधिक छंद भी होते हैं । प्रत्येक छंद का स्वरूप एक 'वाका' (या तांका) कविता की तरह होता है । रेंगा इस प्रकार कई (कम से कम दो) कवियों द्वारा रचित वाका कविताओं के ढीले-ढाले समायोजन से बनी एक श्रृंखला-बद्ध कविता है । रेंगा कविता की आतंरिक मन:स्थिति और विषयगत भूमिका कविता का प्रथम छंद (वह तांका जिससे कविता आरम्भ हुई है) तय करता है । हर ताँके के दो खंड होते हैं । पहला खंड ५-७-५ वर्ण-क्रम में लिखा एक 'होक्कु' होता है । (यही होक्कु अब स्वतन्त्र होकर 'हाइकु' कहलाने लगा है ।) वस्तुत: यह होक्कु ही रेंगा की मन:स्थिति और विषयगत भूमिका तैयार करता है । कोई एक कवि एक होक्कु लिखता है । उस होक्कु को आधार बनाकर कोई दूसरा कवि ताँका पूरा करने के लिए ७-७ वर्ण की उसमें दो पंक्तियाँ जोड़ता है । उन दो पंक्तियों को आधार बनाकर कोई

अन्य दो कवि रेंगा का दूसरा छंद (तांका) तैयार करते हैं । कविता के अंत तक यह क्रम चलता रहता है । रेंगा को समाप्त करने के लिए प्राय: अंत में ७-७ वर्ण क्रम की दो अतिरिक्त पंक्तियाँ और जोड़ दी जाती हैं । रेंगा इस प्रकार एक से अधिक कवियों द्वारा रचित एक से अधिक तांकाओं की समवेत कविता है । 'कस्तूरी की तलाश' रेंगा कविताओं का हिन्दी में पहला संकलन है । दीपक जी ने इसे बड़े परिश्रम और सूझ-बूझ कर संपादित किया है । एक पूरी कविता संपादित करने के लिए वह जिन सहयोगी कवियों को एक के बाद एक प्रत्येक चरण के लिए प्रेरित कर सके, वह अद्भुत है । कवियों को पता ही नहीं चला कि वे रेंगा कविताओं के लिए काम कर रहे हैं । उन्होंने इस रचनात्मक कार्य के लिए स्वयं को मिलाकर ६५ कवियों को जोड़ा । उनके एक सहयोगी कवयित्री का कथन है कि "एकला चलो" सिद्धांत के साथ गुपचुप अपने लक्ष्य को प्रदीप जी ने जिस खूबसूरती से अंजाम दिया, काबिले तारीफ़ है । सच, 'समवेत' कविताओं को आकार देने के लिए वे 'अकेले' ही चले और सफल हुए । कस्तूरी की तलाश में उनकी लगन, श्रम, और प्रतिभा वन्दनीय है | जैसा कि बताया जा चुका है किसी भी रेंगा कविता का आरंभ एक होक्कु से होता है । संकलन में संपादित सभी रेंगा कविताओं के 'होक्कु' स्वयं प्रदीप जी के हैं । कविता के शेष चरण अन्यान्य कविगण जोड़ते चले गये हैं । कुछ अपवादों को छोड़कर अधिकतर रेंगा कवितायें ६ तांकाओं से जुड़कर बनी हैं । अंत में मैं इन रेंगा कविताओं में से कुछ चुनिन्दा पंक्तियाँ आपके आस्वादन हेतु प्रस्तुत कर रहा हूँ -

जीवनरेखा / रेत रेत हो गई / नदी की व्यथा // नारी सम थी कथा / सदियों की व्यवस्था (रेंगा,१)

नाजों में पली / अधखिली कली / खुशी से चली // खिलने से पहले / गुलदान में सजी (रेंगा ११)

बरसा पानी / नाचे मन मयूर / मस्ती में चूर // प्यासी धरा अघाई / छाया नव उल्लास (रेंगा २१)

गृह पालिका / स्नेह मयी जननी / कष्ट विमोचनी // जीवन की सुरभि / शांत व् तेजस्वनी (रेंगा ३०)

रंग बिरंगे / जीवन के सपने / आशा दौडाते // स्वप्न छलते रहे / सदा ही अनकहे (रेंगा ४०)

हरित धरा / रंगीन पेड़ पौधे / मन मोहते // मानिए उपकार / उपहार संसार (रेंगा ५१)

पानी की बूंद / स्वाति नक्षत्र योग / बनते मोती // सीपी गर्भ में मोती / सिन्धु मन हर्षित (रेंगा ६१)

पीत वसन / वृक्ष हो गए ठूँठ / हवा बैरन // जीवन की तलाश / पुन: होगा विकास (रेन्गा ७१)

देहरी दीप / रोशन कर देता / घर बाहर // दीया लिखे कहानी / कलम रूपी बाती (रेंगा ८१)

गाता सावन / हो रही बरसात / झूलों की याद // महकती मेंहदी / नैन बसा मायका (रेंगा ९०)

पौधे उगते / ऊंचाइयों का अब / स्वप्न देखते // इतिहास रचते / पौधे आकाश छूते (रेंगा ९८)

(उपर्युक्त पंक्तियाँ जिन सहयोगी कवियों ने रची हैं उनके नाम हैः - प्रदीप कुमार

दाश, चंचला इंचुलकर, डा. अखिलेश शर्मा, रमा प्रवीर वर्मा, नीतू उमरे, गंगा पाण्डेय, किरण मिश्रा, रामेश्वर बंग, देवेन्द्र नारायण दास, मधु सिन्धी और सुधा राठौर) मुझे पूरा विश्वास है, कि हिन्दी काव्य जगत दीपक जी के इस प्रयत्न की भूरि भूरि प्रशंसा करेगा और उसे रेंगा-पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा ।

- डॉ.सुरेन्द्र वर्मा
(मो, ९६२१२२२७७८)
१०, एच आई जी / १,
सर्कुलर रोड
इलाहाबाद -२११००१

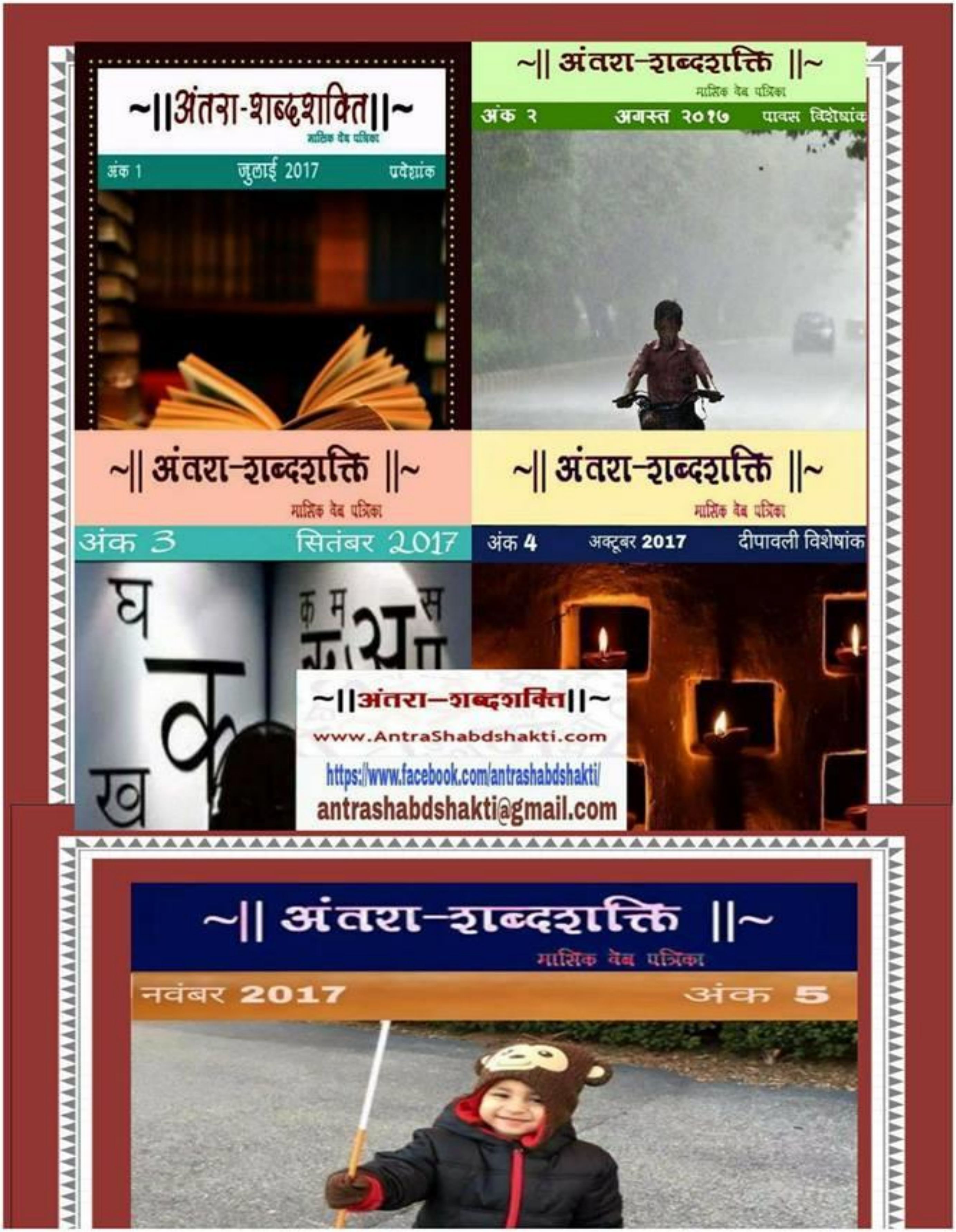
~||अंतरा-शब्दशक्ति||~
मासिक वेब पत्रिका
अंक 1
जुलाई 2017
प्रवेशांक
~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~
मासिक वेब पत्रिका
अंक २
अगस्त २०१७
पावस विशेषांक
~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~
मासिक वेब पत्रिका
अंक 3
सितंबर 2017
~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~
मासिक वेब पत्रिका
अंक 4
अक्टूबर 2017
दीपावली विशेषांक
~||अंतरा–शब्दशक्ति||~
www.AntraShabdshakti.com
https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
antrashabdshakti@gmail.com
~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~
मासिक वेब पत्रिका
नवंबर 2017
अंक 5